ज्ञानामृत

जनवरी, 1984
वर्ष 19 ❋ अंक 7
मूल्य 1.35

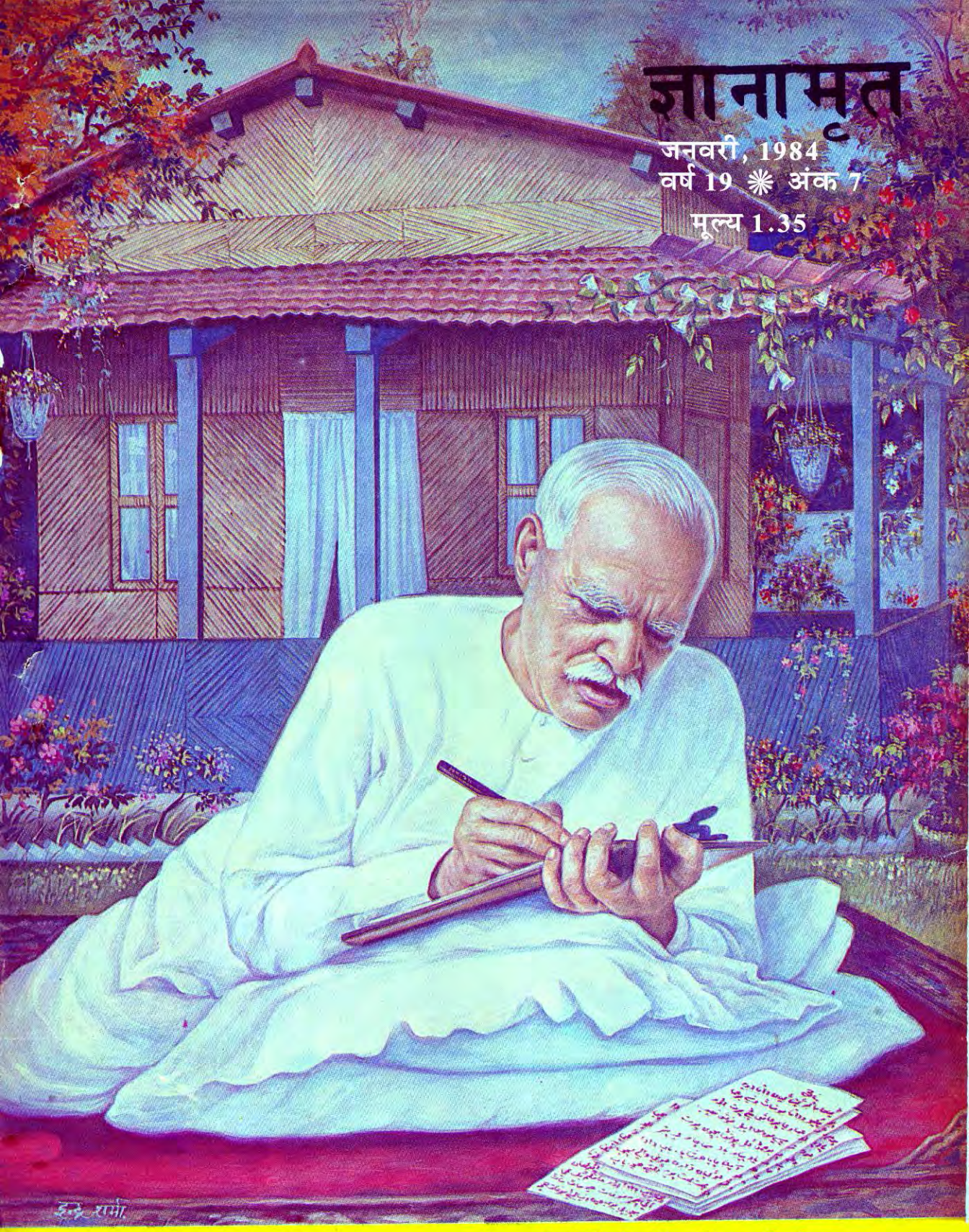

बाबा बच्चों को बहुत ही प्रेरणादायक तथा उत्साह वर्धक पत्र लिखते थे। चित्र में एक ऐसा पत्र लिखते हुए।

सचित्र समाचार

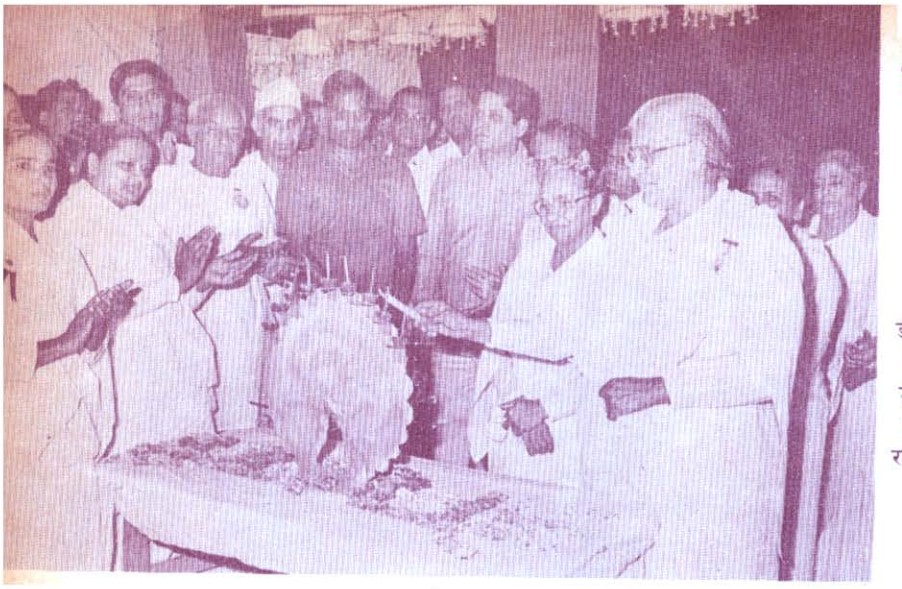

डोम्बीवली (महाराष्ट्र) में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. दादी चन्द्रमणि जी। चित्र में ब्र.कु. रत्नमोहिनी जी, नलिनि जी तथा अन्य दिखाई दे रहे हैं।

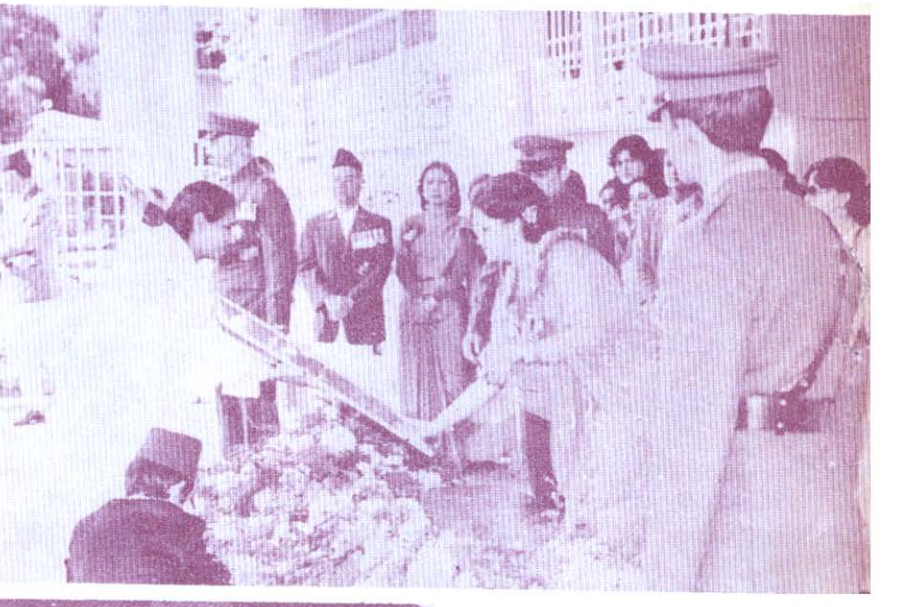

नेपाल की महारानी ऐश्वर्य राज्य लक्ष्मी देवी शाह के ३५वें जन्मोत्सव पर ब्र.कु. राज उन्हें दैवी गुणों का गुलदस्ता का चित्र उपहार में देते हुए।

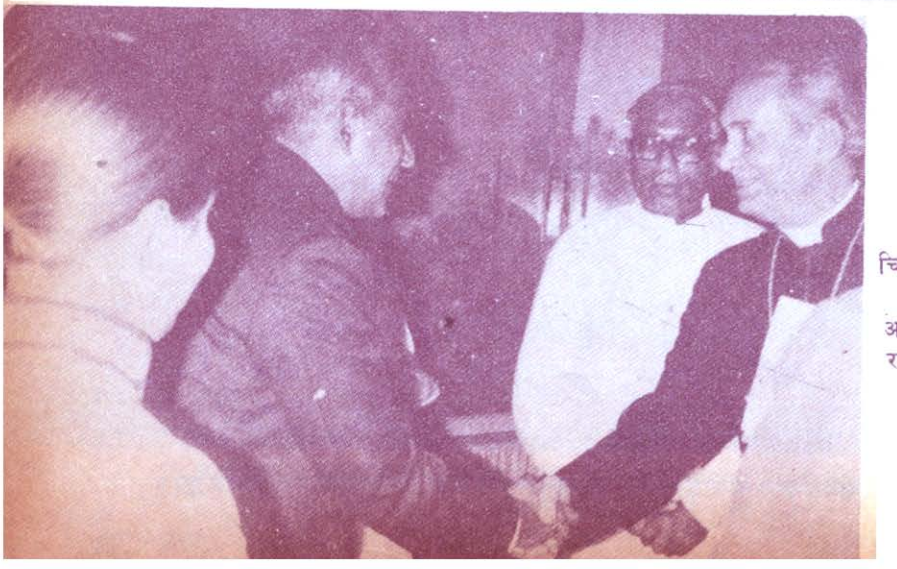

दक्षिण दिल्ली संग्रहालय में हुए विशेष कार्यक्रम के अवसर पर चित्र में उपस्थित हैं भ्राता एम.एस. संजीवी राव, केन्द्रीय उपमन्त्री, आदरणीय एगोस्टीनो केकईविलन, राजदूत होली सी, ब्र.कु. जगदीश चन्द्र जी तथा संतोष बहन।

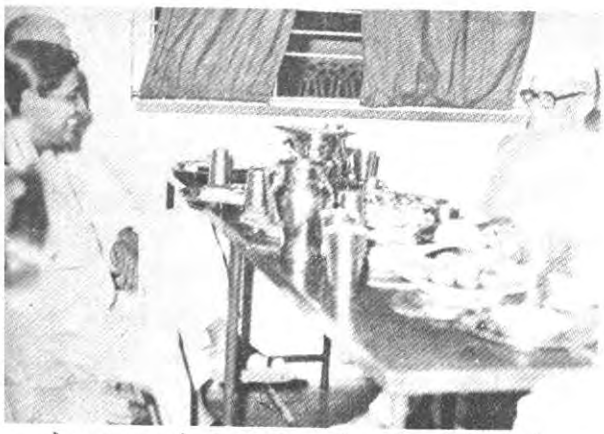

सोमनाथ ट्रस्ट के उध्यक्ष भ्राता मोरारजी भाई देसाई को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. दमयन्ती तथा रमीला बहन।

आबू में हुए स्नेह मिलन में ब्र.कु. जगदीश चन्द्र जी के साथ, भिन्न-भिन्न प्रान्तों से पधारे सी.आर.पी.एफ. के.डी.आई.जी. एस. पी. डी.एस.पी. खड़े हैं।

बम्बई में, प्रसिद्ध गायक भ्राता महेन्द्र कपूर को ब्र.कु. आसुला श्रीकृष्ण का चित्र भेंट करते हुए।

बड़ौदा में अलकापुरी विस्तार में आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए बड़ौदा के महापौर भ्राता जयंति भाई पटेल।

अजमेर में पुष्कर मेले में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी देखने के पश्चात् साहित्य का अवलोकन करते हुए राजस्थान के गृहराज्यमन्त्री भ्राता गोविन्द सिंह जी।

अम्बाला कैन्ट में नए भवन का उद्घाटन करते हुए भ्राता ब्र.कु. रमेश जी।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

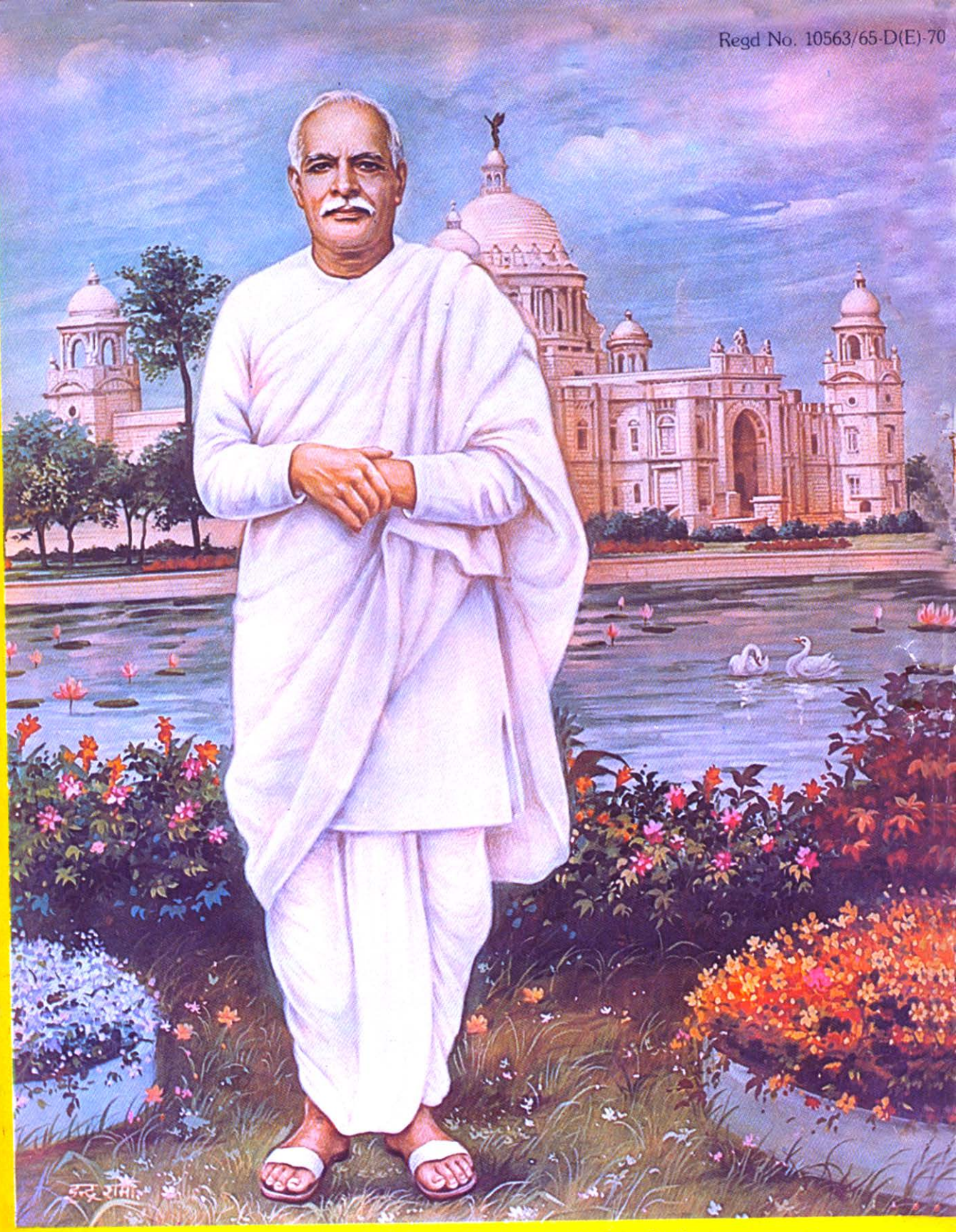

ब्रह्मा बाबा कलकत्ता स्थित विक्टोरिया पार्क में। शिवबाबा की प्रवेशता के पूर्व बाबा कलकत्ता में जवाहरात का व्यापार करते थे।

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ	क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	ब्रह्मा बाबा (सम्पादकीय) ...	२	८.	सफल एवं सुखी जीवन के मार्ग दर्शक ब्रह्मा बाबा ...	२३
२.	तेरा अनुपम प्यार (कविता) ...	५	९.	साकार बाबा के जीवन से अनमोल प्रेरणाएं— ...	२५
३.	बाबा ने मुझे निश्चिन्त बना दिया ...	६	१०.	क्राँति दूत ब्रह्मा ...	२८
४.	बाबा सितारों के बीच पूर्ण चन्द्रमा थे ...	९	११.	गत वर्ष के प्रति (कविता) ...	३०
५.	सचित्र समाचार ...	११	१२.	नव वर्ष में नव स्वागत (कविता) ...	३०
६.	ब्रह्मा तन में परमात्मा का अवतरण ...	१३	१३.	आध्यात्मिक सेवा समाचार ...	३१
७.	सेवा समाचार (चित्रों में) ...	२१			

देह के धर्मों से ऊपर उठकर एक हो जाओ

नव वर्ष पर मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी का शुभ-सन्देश

हम सभी मनुष्यात्माओं के परम प्यारे परमात्मा शिव बाबा ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा समस्त विश्व के कल्याण के लिए ये अविनाशी रुद्र ज्ञान-यज्ञ रचा है। अतः हे सर्व धर्मों की प्रिय आत्माओ—

"इस ज्ञान-यज्ञ में अपने मनोविकारों को स्वाहा करके, परमपिता परमात्मा के सच्चे ब्राह्मण बच्चे बनो। हम सभी आत्माएं हैं और हमारा मूल स्वधर्म पवित्रता व शान्ति है, अतः देह के धर्मों से ऊपर उठ एक हो जाओ और एक परमात्मा की ही श्रीमत का पालन करो।"

परमात्मा पिता शिव ब्रह्मा मुख से बोले—

"हे बच्चो, अपने इस अन्तिम जन्म में पवित्र बनो और राजयोगी बनो। जो आत्माएँ वर्तमान संकट के समय विश्व को पवित्रता का दान देंगी उन्हें ही आने वाली नई सतयुगी दुनिया में पीस (शान्ति) व प्राँसपेरिटी (सम्पन्नता) का प्राइज (इनाम) मिलेगा।"

और हम सब उन आत्माओं को, जो कि बाप-दादा की आशाओं के दीपक हैं, दिव्य प्रकाश से जग को रोशन करना है और बाप-समान बनकर बाप को प्रत्यक्ष करना है ताकि अनेक जन्मों से बिछुड़ी हुई आत्माएँ अपने पारलौकिक परमपिता से मंगल मिलन मना सकें।

सर्व आत्माओं को नववर्ष के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई

ब्रह्मा बाबा

बाबा के जीवन-सागर में हम जितनी डुबकियां लगाते हैं, हमें उतने रत्न मिलते हैं। उनकी जीवन-गाथा आत्मा की ज्योति जगाने वाली, मन को खुशियों के झूले में झुलाने वाली, बुद्धि को ताज़गी देने वाली और रूह को राहत देने वाली है। उसमें एक विशेष प्रकार की मधुरता और शक्ति भरी है जो आत्मा को पुनर्जीवित कर उसमें उमंग और उत्साह भर देती है।

आलस्य और अलबेलेपन से अतीत तथा निद्राजीत

विशेष बात यह है कि बाबा के जीवन में हमने आलस्य का लेश मात्र भी नहीं देखा। शरीर की वृद्धावस्था होने पर भी और रात-दिन मनुष्यात्माओं के संस्कार परिवर्तन के कार्य में लगे रहने पर भी बाबा के जीवन में थकावट के चिह्न कभी दिखाई नहीं दिये। साधारण व्यक्ति अपने जीवन में कई बार ऊँघता हुआ, आँख मूंदता हुआ, नींद से झुटका खाता हुआ दिखाई दे जाता है। नेपोलियन जैसे व्यक्ति भी सोने का स्थान न मिलने पर घोड़े पर ही आँख लगा लेते थे। बड़े-बड़े व्यक्तियों को सार्वजनिक सभा-मंच पर जब हम बैठे देखते हैं, तो जन-समूह सामने होने पर भी किसी की आँख में नींद भरी दिखाई दे जाती है परन्तु बाबा सदा निद्राजीत बने रहे। कभी उन्होंने आलस्यवश किसी कार्य को स्थगित नहीं किया या तन्द्रा के कारण काम को जल्दी समाप्त नहीं किया बल्कि सभी ने उन्हें सदा चुस्त (active) जागरूक (alert) और तत्पर (engaged into action) ही देखा। उन्होंने अकर्मण्यता, निरुत्साहिता और शिथिलता को पूरी तरह से ही निकाल दिया था। गोया तमोगुण का अन्त हो चुका था और सात्विकता का झण्डा उनके तन और मन, दोनों पर सदा लहरा रहा था।

जो काम कभी सामने आया, उन्होंने उसे कभी अधूरे मन से (half heartedly), टूटे मन से (uninterestedly), गफलत से (inattentively) या अलबेलेपन से (carelessly) नहीं किया बल्कि जी-जान से, कर्मठ होकर, डटकर, उत्साहपूर्वक, युद्धस्तर पर, मन लगाकर उसे पूर्णतः के शिखर पर पहुंचाया चाहे कितने भी विघ्न आये, चाहे वह कार्य शुरू में असम्भव-सा प्रतीत हुआ या कार्य में सहयोग देने वाले हाथ पर हाथ रख कर बैठ गए परन्तु उन्होंने उस कार्य को सिरे लगाया। सभी परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने पर भी उन्होंने कार्य को सम्पन्न करने की कोई न कोई राह निकाल ली। यह उनके ओज, तेज मनोबल, दृढ़ता और प्रतिज्ञा का परिचायक है।

उदाहरण के तौर पर देहली के राजोरी गार्डन क्षेत्र में इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के कार्यार्थ जो ज़मीन ली गई थी, उस पर सरकार ने अपना अधिकार जमाने की कोशिश की। सरकार ने ऐसा कानून भी बना लिया कि जिससे वह ज़मीन को अपने हाथ में लेने की कोशिश कर सके। आखिर उन्होंने नोटिस देकर ज़मीन को सरकारी सम्पत्ति बनाने का कदम भी पूरा कर लिया और एक बार तो उच्च न्यायालय ने भी फैसला सरकार के पक्ष में कर दिया। परन्तु फिर भी बाबा ने मन से उस ज़मीन को नहीं छोड़ा। वे न तो कभी उत्तेजित हुए न घबराए, न निराश हुए न सटपटाए, न उन्होंने कभी जमीन मिलने की आशा छोड़ी और न ही उसके लिए प्रयत्न छोड़ने को कहा बल्कि बच्चों को सदा यही ताकीद करते रहे कि वे डटकर कोशिश करते रहें क्योंकि यह ज़मीन ईश्वरीय

कार्यार्थ ली गई थी और उसी में प्रयोग होगी। सरकारी अधिकारियों की कार्यवाहियों के बावजूद भी बाबा का निश्चय सदा यह बना रहा। उन्होंने बच्चों को भी गफ़लत, आलस्य और उत्साहहीनता को सदा छोड़ने के लिए कहा। और इस कार्य को युद्ध-स्तर पर करने की प्रेरणा देने के लिए यह कहा कि कौरवों और पाण्डवों में जिस ज़मीन के लिए लड़ाई हुई थी, वही यह ज़मीन है जिसकी सुई की नोक भर भी सरकार को नहीं देना चाहिए और जिसे आप बच्चों ने लेकर ही दिखाना है। बाबा सदा यही कहते—"विजय आपकी हुई ही पड़ी है। कल्प पहले वाली गीता यही बता रही है।"

आखिर बाबा की बात सत्य सिद्ध हुई और सरकार के सब प्रयत्न विफल हुए। न्यायालय में अन्तिम विजय हमारी हुई। ज़मीन पर अधिकार पाण्डवों को मिला। और आज वहाँ पर पाण्डवों का किला बन गया है जहाँ से बाबा की प्रेरणा से देश-विदेश को संदेश एवं ईश्वरीय निर्देश मिलेंगे।

सारयुक्त और उद्देश्य सहित वार्ता

बाबा के संकल्पों की सिद्धि, उनकी वाणी की ओजस्वता, उनके मन और मुख की तेजस्विता तथा उनकी अमोघ दृढ़ता इसलिए भी बनी रहती थी कि वे जो कुछ सोचते, ईश्वरीय सेवा ही के लिए सोचते। साधारण मनुष्य कई बार दूसरों से ईर्ष्या, स्पर्धा के बखेरे में पड़ जाता है या मान और यश के पीछे लग जाता है अथवा अपनी ही सुख-सुविधा और सफलता की उधेड़-बुन में उलझ जाता है परन्तु बाबा के सभी संकल्प लौकिक स्वार्थ से रहित और सेवा ही के प्रति होते अथवा लोक-हित के प्रयोजन से जुड़े होते। इसलिए उन संकल्पों का सिद्ध होना स्वाभाविक ही था। उनके कोई भी संकल्प निष्प्रयोजन अथवा व्यर्थ होते ही न थे इसलिए ही वे समर्थ कोटि के थे।

आज तक बाबा से न जाने कितने ही व्यक्तियों ने बातचीत की होगी परन्तु कोई भी यह नहीं कह सकेगा कि बाबा की कोई बात निस्सार थी बल्कि हरेक अपने अनुभव के आधार पर यही कहेगा कि बाबा के वचन दिशा-निर्देश देने वाले, रूह में नई तरंग और उमंग भरने वाले, सत्य के पक्ष को उजागर करने वाले, आत्माओं और परमात्मा के विषय को स्पष्ट करने वाले तथा आध्यात्मिक पुरुषार्थ में तीव्रता लाने वाले होते थे। यह बात अलग है कि कोई उनके किसी वाक्य का अर्थ या उद्देश्य न समझ सका हो परन्तु यह कोई नहीं कह सकता कि उनके कुछ वाक्य निरुद्देश्य थे। यदि वे खाने-पीने, रहने-सहने, आने-जाने आदि के बारे में चर्चा करते जो कि प्रत्यक्षतः लौकिक या स्थूल होती तो भी उस वार्तालाप में उस व्यक्ति का कल्याण ही अन्तर्निहित होता। बाबा उसकी स्थूल देखभाल से उसमें निकटता का भाव पैदा कर उसे ज्ञान में तीव्र बनाने की ही चेष्टा कर रहे होते। इस प्रकार बाबा का हर बोल, हर वचन, उनकी हर मुस्कान, हर मुद्रा आत्मा को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने का उद्देश्य लिए हुए होते। विनोदपूर्ण होने के बावजूद भी उन्होंने कभी ऐसी हंसी नहीं की होगी, ऐसी बातों के भंवर नहीं छेड़े होंगे और ऐसे वार्तालाप तथा विषय नहीं छेड़े होंगे जिन्हें पानी में मथनी मारने के अनुरूप व्यर्थ माना जा सके। सच तो यह है कि यदि कोई ऐसा प्रश्न भी करता कि जिसका गति और सद्गति के साथ सम्बन्ध न हो तो इस अवसर पर बाबा यह कहते कि शिव बाबा ने कहा है—"मन्मनाभव। शिव बाबा तो सभी वेदों, शास्त्रों, ग्रन्थों का सार समझा रहे हैं। पहले सार को ग्रहण करो, विस्तार से क्या फायदा?" जो बातें जानना ज़रूरी है, शिव बाबा वह बताते ही जायेंगे। आगे-आगे चलकर बाबा नये-नये रहस्य स्पष्ट करेंगे। इस प्रकार बाबा बातूनी (talkative) बनने, गप हाँकने अथवा निष्प्रयोजन वार्ता में व्यस्त होने की बुरी आदत से छुड़ा देते।

बाबा के पास बैठने वाले तो यह अनुभव करते थे कि जो प्रश्न वे मन में लेकर आते थे, वे प्रश्न या तो उन्हें भूल जाते थे या मौन ही मौन में उनका उत्तर उन्हें मिल जाता था। बाबा की उपस्थिति में वे ऐसा सुख अनुभव करते थे कि उन्हें बात करना भाता ही न था बल्कि उस आन्तरिक सुख का वे रसास्वादन ही किये जाना चाहते थे। बाबा जो बोलते थे, वह उनके लिए वरदान हो जाता था। और बाबा के मुख से अधिक तो बाबा के नयन बोल देते थे। लगता था कि उन खिड़कियों से मन का मीत झाँक रहा है। अपलक

होकर देखते रहने को मन करता था। प्यार, शान्ति, शक्ति आदि जिन ईश्वरीय गुणों का प्रायः गायन किया जाता है, वे प्रायः बाबा के नेत्रों से प्रस्थान करके दर्शक के नेत्रों के माध्यम से उसके आत्मन तक पहुँचकर उसमें उन-उन गुणों का अनुभव कराते। और, इस प्रकार वह नज़र से निहाल हो, आनन्द सरोवर में डुबकियाँ लगाता रहता। बोलने की भाषा से उसे यह मौन की भाषा अधिक प्रिय लगती और प्रभावशाली मालूम होती।

वरदानी दृष्टि

वास्तव में बाबा के नयनों में अनेक विशेषतायें थीं। उनके सन्मुख बैठे व्यक्तियों से बाबा जब मौन की भाषा में बातें करते तो उसे लगता कि उसकी आत्मा के संस्कार बदल रहे हैं और आगे के लिए भी उसका मार्ग उसके लिए प्रशस्त हो गया है। गोया उस दृष्टि का फल यह होता कि जैसे उन्होंने दर्शक के मन की शल्य-क्रिया (surgical operation) करके उसमें से विष अथवा रोग के कीटाणुओं अथवा सड़े-गले भाग को निकाल दिया है। कभी उन द्वारा ऐसा लगता कि आत्मा की उनसे पुरानी पहचान है और चिरातीत से उनसे निकटता रही है परन्तु विशेष बात तो यह कि उनके नेत्रों की ज्योति-छटा दर्शक को अपने सूक्ष्म यान में बिठाकर एक न्यारे लोक अथवा न्यारी स्थिति में ले जाती। निहारते-निहारते उसे ऐसा लगता कि वह कहीं दूर आकाश में, नहीं, उससे भी पार ज्योति देश में और उसमें भी आगे-आगे वह पहुँच गया है। जहां एकान्त है, शान्ति है, उपरामता है, शक्ति-प्रवाह है, ज्योति समुद्र है, एक अवर्णनीय आनन्द है और एक शाश्वत शान्ति का साम्राज्य है। उसे ऐसा महसूस होता कि बाबा के नेत्र उसे प्रेम-पालकी में बिठाकर उत्तरोत्तर रूहानियत के शिखर पर ले जा रहे हैं जहाँ उसका मन खूब भर-भर कर आनन्द के प्याले पीता है और आत्मा को ऐसा महसूस होता है कि उसमें प्रकाश और शक्ति की पराकाष्ठा ऐसे बढ़ती जा रही है कि उसमें से प्रबल प्रकम्पनों की एक बाढ़-सी प्रवाहित हो रही हो जो दिशा-दिशान्तर में अवरुद्ध गति से बढ़ती जा रही है। ऐसी कमाल की थी बाबा की दृष्टि।

मनो परिवर्तन की प्रभावशली युक्तियाँ

बाबा की एक अद्भुत विशेषता यह थी कि वे किसी आत्मा के गुणों के बल से उसे ऊँचा उठा लेते और इस प्रकार उसे उत्साहित करते कि उसे अपने अवगुणों को स्वयं महसूस करने और उन्हें निकालने के लिए स्वयं दृढ़ संकल्प करने के लिए तैयार कर लेते। इस कलिकाल में हर एक मनुष्यात्मा में अवगुण अथवा दुर्गुण भरे हुए हैं—यह बात तो स्वयं बाबा ने बता ही दी है परन्तु मनुष्य में एक कमी यह है कि वह अपनी कमियों को देखते-देखते और कमज़ोर होता जाता है और इस दलदल से जितनी निकालने की कोशिश करता है, उतना और धंसता जाता है। 'डूबते को तिनके का सहारा'—इस युक्ति के अनुसार मनुष्यात्माओं को अब ऐसे बल की ज़रूरत है कि जिससे वह एक बार संभल सके, खड़ा हो सके और आत्मविश्वास से कर्त्तव्य में जुट सके। अभी तो विकारों से हारने पर उसका मन भी हारा हुआ है और उसके घुटने व कमर इतनी टूट चुकी है कि उसमें उठने की हिम्मत नहीं। अब उसे एक लाठी की ज़रूरत है और यह लाठी उसके अपने गुणात्मक पक्ष की पहचान है। बाबा आत्माओं को यही पहचान देकर और उत्साह के वचनों से उन्हें प्रेरित कर उनके जीवन में नई स्फूर्ति ला देता कि वे अपने जीवन में आशातीत परिवर्तन ला सकते।

एक बार की बात है कि एक ब्रह्माकुमारी बहन अपने केन्द्र के बहन-भाइयों के संगठन को मधुवन ले आई। पार्टी को बाबा से मिलाने से पहले उसने बाबा को कहा कि "बाबा, अमुक भाई बहुत तंग करता है। यह स्वयं नियमों में भी नहीं चलता, क्लास में भी देर से आता है, और विद्यार्थियों को भी बिगाड़ता है और उनमें ढीलापन लाता है। यह क्लास में आना भी नहीं छोड़ता और ज़िद करके मधुवन तक भी आ पहुँचता है, इसे कैसे ठीक करूँ? यह मेरी मेहनत पर पानी फेर देता है और समझाने पर समझता भी नहीं बल्कि और ही सामना करता है। न यह ज्ञान में ठीक चलता है न चलने देता है···" बाबा ने कहा—"अच्छा, मैं देख लूँगा।"

जब वह पार्टी बाबा से मिलने आई तो बाबा ने उस व्यक्ति को कहा कि उसमें फलां-फलां गुण हैं।

सबके सम्मुख अपनी महिमा सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। और जब वह पार्टी बाहर निकल रही थी तो वह व्यक्ति बोला कि सचमुच मुझे तो बाबा ही पहचानते हैं। यह सुनकर वह बहन सोचने लगी कि यह व्यक्ति तो और भी सिर पर चढ़ जाएगा। सबके सामने बाबा के मुख से अपनी महिमा सुनकर तो यह और भी अकड़ जाएगा और अब मुझे तो यह और भी अधिक तंग करेगा।

जब वह पार्टी बाहर आ रही थी तो वह व्यक्ति बोला—"बहनजी, मुझे बाबा से केवल दो मिनट अलग मिलवा दीजिए।"

यह सुनकर तो उस बहन ने समझा कि अभी से ही यह अपने को विशेष समझने लगा है। आगे चल कर यह मेरी तो बात सुनेगा भी नहीं। ख़ैर, उसने उस व्यक्ति को बाबा से मिलने दिया और जब वह बाहर चला गया तो उस बहन ने आकर बाबा से कहा—"बाबा, मैंने तो पहले ही से आपको इस व्यक्ति के बारे में बताया था। आपने तो इसको अलग से समय दिया है और अलग से महिमा भी की है जिससे कि यह और भी अब अपने को कुछ विशेष समझने लगेगा और मुझे तंग करेगा।"

बाबा ने कहा—"बच्ची, बाबा ने तो उसे ठीक ही किया है। वह तो अब स्पष्ट रूप से यह लिखकर दे गया है कि उसने क्या-क्या भूलें की हैं और उसमें क्या-क्या बुराइयां हैं जिन्हें कि वह निकालने की और ठीक करने की कोशिश करेगा।"

यह सुनकर उस बहन को आश्चर्य हुआ। अब उसने बाबा की यह युक्ति समझी कि कैसे बाबा किसी की यथार्थ महिमा करके उसे अपना बनाते हैं जिससे कि वह व्यक्ति अपनी भूलें स्वीकार करता है और आगे के लिए अपने जीवन में परिवर्तन लाने की चेष्टा करता है।

ऐसी अद्भुत थी बाबा की युक्तियाँ जिन द्वारा वे मनुष्यात्माओं में परिवर्तन लाते। □

तेरा अनुपम प्यार (ब्र. कु. रिखी किशोर, भिलाई नगर)

भूल न सकेंगे बाबा हम तो,
तेरा अनुपम प्यार ॥

प्रेम के निर्मल जल से तूने,
हर रूह को सींचा है;
हिय दिल से लगाया तूने,
एक रूहानी बगीचा है ॥

दृष्टि तेरी है निराली,
बहती है प्यार की धार ॥ भूल न सकेंगे बाबा···

एक-एक कलि को चुना,
"कलि" के विरान जंगल से;
सुगन्धि हर मन में भर दी,
निज आभा के मण्डल से।

हर देहि में सौरभ आयी,
आयी बसंत बहार ॥ भूल न सकेंगे बाबा···

तेरे एक-एक कर्म ने,
प्रेरणा पाठ पढ़ाया है;
रखते कदम में कदम तुम्हारे,
आगे हमें बढ़ाया है।

मातृवत् मिली है पालना,
पितृवत् मिला दुलार ॥ भूल न सकेंगे बाबा··

निराकार बाप के गुण को,
तुझ में पाया साकार;
भूल न सकेंगे बाबा हम तो,
वो तेरा उपकार।

तेरे निर्मानचित्त ने बनाया,
हमको निरहंकार ॥ भूल न सकेंगे बाबा ··

होकर के अव्यक्त रूप से,
व्यक्त रूप में आते हो;
देकर के सबको वरदान,
अलौकिक प्यार लूटाते हो।

साकार भासना आती हरपल,
भले हो तुम आकार ॥ भूल न सकेंगे बाबा··

अव्यक्त रूप सूक्ष्म वतन में,
आओ-बच्चे! बुलाते हो;
एक-पल हमको गोद बिठाकर,
एक-पल गले लगाते हो।

आप हो मेरा सब कुछ बाबा,
आप मेरा संसार ॥ भूल न सकेंगे बाबा···

————

बाबा ने मुझे निश्चिन्त बना दिया

—ब्र०कु०जानकी

सबके हृदय में अपना स्थान बनाए हुए, शान्ति और तपस्या की साक्षात् मूर्ति दादी जानकी जी, मधुवन के चेतन बगीचे का अत्यन्त आकर्षक व सुगन्धित सुमन हैं। उनको देखकर बाबा की यादें साकार हो जाती हैं। उनसे मिलकर मन को पूर्ण सन्तुष्टि होती है। उनकी पावन दृष्टि पाकर आत्माओं को शान्ति व अशरीरीपन का आभास होने लगता है। उनके द्वारा अनेक अत्माओं को नव-जीवन मिला, अनेकों के कदम तीव्र पुरुषार्थ की राहों पर चले, अनेकों के जीवन में आशाओं के दीप जले।

आपने ४७ वर्ष से इस ईश्वर रचित अविनाशी रुद्र यज्ञ की सेवाओं में अपना जीवन सफल किया है। आप पिछले १० वर्षों से विदेशों में स्थापित सभी राजयोग सेवा-केन्द्रों की निर्देशिका रहीं। आपके नेतृत्व में विदेशों में विशाल रूप से ईश्वरीय सेवाओं का विस्तार हुआ। वर्तमान समय ईश्वरीय विश्व विद्यालय की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका हैं। उनके ईश्वरीय रसों से भरे जीवन की कुछ झलकियां उन्हीं के भावों में प्रश्नोत्तर रूप में यहां प्रस्तुत हैं। —सम्पादक

प्रश्न—दादी जी, आपने इस दिव्य जीवन में कैसे प्रवेश किया ?

उत्तर—मेरा जन्म १९१६ में हैदराबाद (सिन्ध) में एक सम्मानित परिवार में हुआ था। घर में धार्मिक वातावरण होने के कारण बचपन से ही मैंने अनेक धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन किया। महान पुरुषों की जीवनी पढ़ना मेरा मुख्य शौक था। जब मैं मीरा की कहानियाँ पढ़ती थी तो मन में तीव्र प्रेरणा आती थी कि मैं भी इन जैसी ही प्रभु-प्रेम में मग्न बनूं। साँसारिक जीवन व्यतीत करने का मेरा कोई इरादा नहीं था।

पहले से ही लौकिक सम्बन्ध में समीप होने के कारण ब्रह्मा बाबा के प्रति मेरा अति स्नेह व सम्मान था। जब बाबा ने ओम मण्डली शुरू की, तब मैं १९ वर्ष की थी। **एक दिन जब मैं अपने लौकिक बाप के साथ रास्ते से जा रही थी तो मैंने बाबा को सामने से आते देखा, मुझे बाबा विष्णु रूप में दिखाई दिये।** बस मेरा मन नाच उठा कि मुझेतो भगवान मिल गये। यही अलौकिक अनुभव मेरे जीवन का आरम्भ था। बस फिर तो मुझे ऐसी ईश्वरीय लग्न लगी जो कोई भी रोक न सका। कुछ ही समय में मेरा सारा परिवार इस रुद्र-यज्ञ में स्वाह हो गया और मैं भी कुछ विघ्नों को पार करके २१ वर्ष की आयु में सम्पूर्णतया ईश्वर की गोद में विश्राम पाने आ गई।

प्रश्न—ज्ञान में आपको किस बात ने सबसे अधिक आकर्षित किया ?

उत्तर—मुझे गुरु और विद्वानों के प्रति सत्कार तो बहुत था, परन्तु क्योंकि वे परमात्मा की ओर ध्यान नहीं खिचवाते थे, इसलिए मुझे उनके प्रति आकर्षण नहीं होता था। मैं सोचती थी कि मुझे कोई ऐसा महापुरुष मिले जो मेरा नाता भगवान से जुड़ाये और यही मुख्य बात यहाँ मेरे आकर्षण का केन्द्र बनी। मैंने देखा कि बाबा बहुत ही आथर्टी से बोलता है अपनी ओर ज़रा भी ध्यान नहीं खिचवाता, अपने चरण

भी नहीं छूने देता। यही अलौकिकता मुझे खींच लाई। यद्यपि मैंने कई ग्रन्थ पढ़े थे तथापि बाबा की सभी बातें मुझे पूर्ण सत्य लगती थीं।

प्रश्न—बाबा के साथ के अपने कुछ संस्मरण सुनाइये। बाबा से आपने क्या-क्या सीखा व क्या-क्या वरदान पाये ?

उत्तर—बाबा की यादें नयनों में अश्रुकण छलका देती हैं। **बाबा ने हमें ईश्वरीय प्यार देकर संसार भुला दिया। उन्होंने हमें ईशारों से ही महान बना दिया।** हमारा परम भाग्य है जो जीवन के अनमोल क्षण उस महानतम पुरुष के साथ बीते, **इन नयनों ने भगवान को नव-युग रचते देखा।** अनेक गाथाएँ मन पर उभर रही हैं, परन्तु कुछ प्राप्त वरदानों का वर्णन संक्षेप में इस प्रकारहै—

बाबा ने हमें नव-जीवन दिया। बाबा का दिव्य स्वरूप आँखों के आगे घूम रहा है। जब मैं भण्डारे में चक्कर लगाने जाती हूँ तो बाबा का भण्डारे में चक्कर लगाना सामने आ जाता है।

बाबा ने मुझे निश्चिन्त बनाया

मुझे पुरुषार्थ की बहुत चिन्ता रहती थी। बाबा ने कहा "तुम चिन्ता न करो। तुम श्री-मत पर चलो तो मैं भाग्य बनाकर तुम्हारे हाथ में दूंगा।" उस दिन से मेरी चिन्ता समाप्त हो गई और मैंने केवल निश्चिन्त रहने का ही पुरुषार्थ किया।

बाबा ने सिखाया—बच्ची कभी भी किसी की बातों में मत आना

एक दिन अमृत वेले बाबा स्वयं मेरे पास वरदान देने आये। आते ही कहा—"बच्ची, कभी भी किसी की बातों में मत आना नहीं तो बाप की बातें भूल जाएंगी। क्योंकि दूसरों की बातों में मिलावट अवश्य होती है और मिलावट दुखदाई होती है।" उस दिन से यह महामंत्र मेरे जीवन का आधार बन गया। और मैं पूर्ण सुरक्षित हो गई क्योंकि ये व्यर्थ की बातें ही संगठन में संघर्ष पैदा करती हैं।

बिना पूछे ही समाधान—

एक बार मैं बाबा के पास गई और सोचा कि बाबा से ये-ये बातें पूछूंगी। मेरे जाते ही बाबा ने मुझसे बातें करनी प्रारम्भ की और सब कुछ बता दिया। फिर पूछा "बच्ची कुछ पूछना है ?" मैंने कहा-"बाबा सब कुछ बताकर फिर पूछते हो।"

तब बाबा ने वरदान दिया—"**बच्ची, जो भी तुम्हारे सामने आएगा उसे बिना पूछे हां तुमसे सब कुछ मिल जाएगा**" यह वरदान मेरे साथ है। विदेशों में भी अनेक आत्माओं से मिलते हुए ऐसे ही अनुभव रहे।

जनक समान उपराम—

एक बार बाबा मुझसे काफी दूर खड़े थे। मुझे विचार आया कि बाबा मुझे बुलाये। तुरन्त ही बाबा ने आवाज़ दी "**जनक बेटी**"। मैंने राजा जनक की कहानी पढ़ी थी। वह कहानी मेरे मानस पटल पर उभर आई। इस जनक शब्द से मुझे बहुत प्रेरणा मिली। मुझे एहसास होने लगा कि मुझे राजा जनक की तरह विदेशी और ट्रस्टी बनना है।

मस्त फकीर बनने का वरदान—

बाबा कई बार मुझे मस्त फकीर कहकर बुलाते थे। इन शब्दों से मुझे नशा चढ़ गया। यह कहकर बाबा ने मुझे सदा खुदाई खिदमत में रहने का वरदान दिया। और बाबा के ये बोल आज भी मेरे कानों में गूंजते हैं और मुझे मस्त बनाते हैं।

मैंने बाबा से सीखा कि हम किसी को भी बड़ा आदमी क्यों समझें। जब कोई भी बड़ा आदमी बाबा के पास आता था तो बाबा उसे बच्चा, बच्चा कहकर आत्म-भाव से बातें करते थे, तो वह भी अपने को बच्चा ही समझने लगता था। तो जब कोई भी हमसे मिलता है तो मैं उसे बाबा का बच्चा—आत्मा ही समझती हूँ।

मैंने बाबा से मुरली का महत्व बहुत सीखा। भगवान हमें पढ़ाने आते हैं, तो उसकी मुरली से, जो कि हमें मस्त बनाती है, हमारा कितना प्यार हो ! इसलिए मैं प्रत्येक मुरली को अनेक बार पढ़ती थी।

प्रश्न—आपने अपने पुरुषार्थ में किन-किन बातों पर ध्यान रखा ?

उत्तर—भगवान के लव में लीन हो जाने के बाद मन में और कुछ भी पाने की इच्छा नहीं रही। अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए मैंने जीवन के कुछ सिद्धांत बनाये।

० मनन चिन्तन मेरा स्वभाव बन गया था। मेरा मन्त्र था, "अपनी घोट तो नशा चढ़े।" इस मनन ने मुझे व्यथ चिन्तन व श्रवण से मुक्त रखा।

० श्रीमत पर चलना मैं भगवान का सम्मान सम-

झती थी। सदा सोचती थी कि "मैं नहीं करूंगी तो भला कौन करेगा।"

० शुरू से ही ध्यान रहा कि यज्ञ में तन-मन से पूर्ण सेवा करूं। जिस तन से जन्म जन्म विकर्म किये, उस तन से अब पुण्य कर्मों का खाता भरपूर करूं।

० प्रारम्भ से ही मैंने अमृत वेले के योग को पूर्ण महत्व दिया।

० मुझ ज्यादा बातें करना अच्छा नहीं लगता था। मैंने एकान्त व अन्तर्मुखता को अपना साथी बना लिया था। इसलिए सभी मुझे सन्यासी कहते थे।

मुझे बहुत डर लगता था कि मैं किसी की ग्लानि न सुन लूं या मेरे मुख से किसी की ग्लानि न हो जाए। मैं किसी बाह्य-मुखी का संग न कर लूं।

यज्ञ की ग्लानि सुनना मुझे महापाप लगता था। मैं सोचती थी कि जो भगवान के यज्ञ की ग्लानि करता है वह महिमा योग्य कैसे बनेगा।

० मुझे पर चिन्तन से ग्लानि थी।

० मुझे यज्ञ-सेवा छोड़कर योग करना अच्छा नहीं लगता था। मैं सेवा में ही आत्माभिमानी होने का अभ्यास करती थी। सेवा ही मुझे योगी बनायेगी यह मेरा विश्वास था। मैं देखती थी कि बाबा हँसते-हँसते नरसे नारायण बन रहा है तो हम पुरुषार्थ में गले क्यों?

० जीवन में मुझे बहुत ध्यान रहा कि मैं दूसरों का अवगुण रूपी किचड़ा न ग्रहण करूं। मेरा मन्त्र था—**त्रुटि देखो और तपस्या भंग हुई।**

० बाबा ने हमें सिखाया कि दूसरों के स्वभाव का प्रभाव तुम पर न पड़।

प्रश्न—शारीरिक बीमारी के समय आपका क्या अनुभव रहता है?

उत्तर—शारीरिक बीमारी ने मुझे कभी भी बेचैन नहीं किया। मैं सोचती हूँ कि जो बीमारी आएगी वह चली जाएगी। मेरे मन में कभी निराशा भी नहीं बसी कि अब मैं सेवा नहीं कर पाऊँगी, बल्कि मुझे निश्चय रहता है कि हर घटना मेरे पार्ट में कुछ नवीनता अवश्य लायेगी। बीमारी के क्षणों में मैं स्वयं को मनन-चिन्तन के द्वारा आगे के लिए तैयार करती रहती हूँ और मनसा द्वारा सेवा करती हूँ।

मैं सदा अनुभव करती हूँ कि **ड्रामा कल्याणकारी** है। और बीमारी, कर्म भोगना नहीं, बल्कि भगवान की कुछ योजना है। साथ-साथ सहन-शक्ति भी बढ़ती है। मुझे ख्याल रहता है कि मेरे बीमार होने की भासना दूसरों को न आवे। बीमारी कभी भी मेरी खुशी को कम नहीं करती।

प्रश्न—दैहिक बीमारी के समय आपका कोई विशेष अनुभव?

उत्तर—सन् १९८१ में लंदन में मैं ६ मास तक बहुत बीमार थी। परन्तु उसी समय मुझे जीवन के सर्वश्रेष्ठ अनुभव हुए। मैं पूरा समय चारपाई पर ही लेटी रहती थी। मेरा जीवन मानो सूक्ष्म वतन का जीवन बन गया था। मुझे आभास रहता था कि मैं सूक्ष्म वतन में हूँ।

सारा सृष्टि-चक्र मेरे सामने घूमता रहता था। उससे पूर्व जब मैं मधुबन से लन्दन जा रही थी तो अव्यक्त बाप-दादा ने मुझे गोद में बैठाया था और दोनों ओर दीदी, दादी बैठे थे। यह दृश्य मेरे मन में छप गया था। बीमारी के ६ मास में अधिक समय यह दृश्य मेरी आँखों के सामने उभरा रहा। मैं महसूस करती थी कि हम तीनों इसी तरह वतन में बाबा के साथ हैं।

उन्हीं दिनों पूर्ण उपरामता व सम्पूर्ण निर्लिप्तता का अनुभव रहा। लाइट व माइट की स्थिति का भान पक्का हो गया। कर्मातीत स्थिति में क्या अनुभव होंगे—यह स्पष्ट हो गया। यह था मेरे फरिश्तेपन का दिव्य अनुभव। ०

सभी ब्राह्मणों के लिए दादी जानकी जी की प्रेरणा

भगवान के वत्सों का ऐसा स्वरूप हो जो सभी से भगवान दिखाई दे, अब समय अति समीप है अतः सभी ब्राह्मण मेरे-पन के आसक्त भावों से ऊपर उठकर फरिश्ता बनें। संसार में चारों ओर उड़ते हुए फ़रिश्ते दिखाई दें--यह मेरी सभी के प्रति श्रेष्ठ भावना है।

हमारे ब्राह्मण परिवार में अशुद्धि रंच मात्र भी न हो क्योंकि शुद्धि में ही शक्ति है। ज्ञान योग हमारे गहने हैं, सभी ब्राह्मणों की सूरत पर ये ही दिव्य गहने चमकें। ब्राह्मणों के वचन इतने शुद्ध हों, जो तन-मन शीतल हो जाए।

और मैं यह भी कहूँगी कि सभी ब्राह्मण अति प्रेम से भोले-नाथ के भण्डारे का ब्रह्मा भोजन स्वीकार करें। नाराज़गी से या स्वयं को बीमार समझ कर भोजन पान न करें। तब योग-युक्त होकर बनाया व खाया गया यह परम पवित्र ब्रह्मा-भोजन हमारे तन, मन को शीतल करेगा।

बाबा सितारों के बीच पूर्ण चन्द्रमा थे

(ब्र०कु० मनोहर इन्द्रा, आबू)

इस सृष्टि मंच पर भगवान के अनेक दिव्य चरित्रों को देखने वाली और अनेक वरदानों से सजी हुई मनोहर दादी अपनी प्रभावशाली वाणी से जिज्ञासुओं के मन पर अमिट छाप छोड़ती है। वर्तमान समय आप ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के मुख्यालय में प्रमुख स्थानों व मुख्य जिम्मेदारियों को सम्भालते हुए कार्यरत हैं। आने वाले सभी भाई-बहन आपके अनुभव युक्त क्लास सुनकर गद्‌गद् होकर लौटते हैं। बाबा के चरित्र सुनाकर आप सभी को प्रभु-प्रेम में मग्न कर देती हैं। इस प्रकार श्रेष्ठ ईश्वरीय सेवा व तपस्या में रत दादीजी के अनुभव उन्हीं के भावों में प्रस्तुत हैं— **सम्पादक**

मेरा जन्म १९२४ हैदराबाद सिन्ध में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। एक दिन गली से गुजरते हुए मुझे एक मकान के अन्दर से मन को मोहने वाली ओम की ध्वनि सुनाई दी। मैंने उस घर में प्रवेश किया तो मन भाव-विभोर हो उठा। मैंने देखा अनेक स्त्री-पुरुष ओम की ध्वनि सुनकर प्रभु-प्रेम में मग्न हैं। बस यही दृश्य मेरे मन को इतना भाया कि मैं भी प्रभु-प्रेम में लीन हो गई।

तब मेरी आयु १३ वर्ष की थी। मुझे सांसारिक जीवन से वैराग्य था। मैं प्रभु की होना चाहती थी। जनता सेवा करने की भावना मेरे मन में बैठी हुई थी। परन्तु ऐसा प्रेम कहीं से भी न मिलने के कारण मनबहुत ही निराश रहता था। परन्तु ओम मण्डलीसे सम्पर्क होते ही मेरे जीवन में आशाओं के दीप जले। मुझे कोर्स कराया गया। मैं शान्त समाधी में घण्टों बैठी रहती थी। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगती थी कि मैं आत्मा हूँ और शान्त स्वरूप हूँ। इस स्थिति का मैंने खूब अभ्यास किया। कुछ समय के बाद जब मैंने बाबा को देखा तो मुझे उनसे अपनापन महसूस हुआ। बाबा के मस्तक का तेज मुझे बहुत आकर्षित करता था और सभी के बीच खड़ा हुआ बाबा मुझे ऐसा लगता था—**मानो सितारों के बीच पूर्ण चन्द्रमा चमक रहा हो।**

मेरी लगन निशिदिन बढ़ती गई। कुछ ही समय बाद मेरे लौकिक बाप का देहान्त हो गया। चारों ओर हाहाकार मचा, परन्तु मेरा चित्त शान्त था। मैं सभी को सान्त्वना देती थी कि देह विनाशी है, अविनाशी आत्मा तो शान्त है। मेरे शान्ति के अनुभव ने मुझे भी पूर्ण शान्त रखा और सभी को भी शान्ति दी। तब मेरी इस स्थिति का सभी पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

कुछ समय बाद, कुछ सम्बन्धियों के विरोध के बावजूद भी मेरी माँ ने मुझे इस रुद्र-यज्ञ में स्वाहा होने की छुट्टी दे दी और मैं पूर्ण स्वतन्त्र होकर यज्ञ-सेवा में अपने जीवन को सफल बनाने के लिए आ गई।

कुछ समय बाद ही बस की एक ऐसी दुर्घटना हुई जो चारों ओर शिव बाबा के बच्चों की श्रेष्ठ स्थिति का साक्षात्कार हो गया। एक दिन हम अपनी ही बस

में बाबा की मुरली सुनने जा रहे थे। दादी बृजइन्द्रा जी बस चला रही थीं तो अचानक बस गड्ढे में जा गिरी। बड़ी भारी दुर्घटना हुई। सभी को चोट लगी, किसी की बाँह कट गई, किसी का सिर फट गया तो किसी की टाँग टूट गई। चारों ओर खून ही खून नज़र आने लगा। परन्तु दर्दनाक सीन में भी हम वत्सों के मन शान्त थे और चेहरों पर वही मुस्कराहट थी। देखने वाले हैरान थे, डाक्टर सोचते कि इनके पास क्या शक्ति है। उन बेचारों को क्या पता कि स्वयं सर्वशक्तिवान इनके साथ है। वे पूछते थे, तो उत्तर मिलता था—मैं तो ठीक हूँ—ये दुख तो इस देह को है और छोटे-छोटे बच्चों की यह महान सहनशक्ति देखकर डाक्टर दाँतों तले अंगुली दबा लेते थे। ब्राह्मण बच्चों की इस मनोस्थिति की चर्चा अखबार द्वारा चारों ओर फैल चुकी थी। और सभी जगह बाबा की महानताओं के गुणगान होने लगे थे।

बाबा ने मुझे कैसे आगे बढ़ाया—

मुझे इस ईश्वरीय पढ़ाई का बहुत शौक था। बाबा निबन्ध (Essay) लिखने को देते थे तो मैं सबसे पहले लिखकर जाती थी। इस प्रकार मेरा मनन का अभ्यास बढ़ता गया और साथ ही साथ बाबा ने हमें भाषण करना भी सिखाया। बाबा मुझे कहा करते थे—"ये तो ज्ञान गंगा है—ये तो शेरनी है"। इस प्रकार उमंग, उत्साह बढ़ाते हुए अथाह प्यार देकर बाबा ने मुझे आगे बढ़ाया। यज्ञ में हमारी १०-१२ बहनों की एक पार्टी बन गई थी जिसे बाबा प्यार से मनोहर पार्टी कहते थे। हम सभी बहनें आपस में मनन करती थीं, भाषण भी तैयार करते थे और हर प्रकार की यज्ञ सेवा करते थे। जहाँ भी आवश्यकता पड़ती थी तो बाबा कहते थे कि मनोहर पार्टी को भेजो। तो यह हमारा परम सौभाग्य रहा कि बाबा ने हमें हर तरह से आगे बढ़ाया।

चौदह वर्ष का बनवास—

शुरू में हमारे सम्बन्धी पूछते थे कि तुम कब लौटोगी, तो हमें बाबा ने कहा था कि उन्हें बताओ कि ये हमारा १४ वर्ष का बनवास है, हमारी १४ वर्ष की योग तपस्या है। उसके बाद हम आपकी सेवा में आयगी। बस १४ वर्ष बाबा ने हमसे पूरी तपस्या कराई। हमें अबला नारी से शेरनी शक्तियाँ बनाया, हमारे मन का भय निकाला, हमारी लज्जा समाप्त की। हमें आत्मा का इतना अधिक अभ्यास कराया जो हमें यह भान निकल गया कि हम नारी हैं।

बाबा हमें विशेष योग के प्रोग्राम देते थे। हम रात भर जागकर, कभी-कभी आठ घण्टे बैठकर योग-अभ्यास करते थे। इस प्रकार बाबा ने हमारे जीवन में तप कराया और हमने देखा कि सचमुच जीवन तप कर ही निखरता है।

इसी मध्य, भारत स्वतन्त्र हुआ और पाकिस्तान बना। वहाँ पर नर-संहार हुआ, विनाश का ताण्डव नृत्य हुआ। परन्तु हम सब पूर्ण सुरक्षित थे। हमें लगता था कि हम सद्गुरु की छत्रछाया में हैं। बाबा ने उस समय हमें अशरीरी-पन का बहुत अभ्यास कराया। बाबा कहते थे – **बच्ची तुम सदा इस देह से उपराम होकर रहो ताकि यदि कोई भी तुम्हारे सामने आये तो उसे तुम्हारी देह दिखाई ही न दे।**" तब बाबा हमसे रात-रात योगाभ्यास कराते थे। तब हमने महसूस किया कि उस समय (१९४७-५०) तक, जो भी मुसलमान हमारे पास आते थे, बड़ी ही रूहानी दृष्टि से मिलते थे। वे हमें बहुत सत्कार देते थे तथा हर तरह से सहयोग देते थे। उनकी भावना हो गई थी कि ये सब देवियाँ खुदाई खिदमतगार हैं। उसी समय बाबा ने हमें यह पाठ बहुत पक्का करा दिया था कि **तुम्हारा संसार में कोई भी दुश्मन नहीं है, इसलिए तुम निर्भय होकर रहो।** इस बात ने हमारे मन में सभी के प्रति आत्मीयता की भावना पैदा कर दी थी। परिणामस्वरूप ३ वर्ष तक हम वहाँ पूर्ण शान्ति व सुरक्षा के साथ रहे—तभी तो कवि ने कहा है—"जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय।"

साक्षात्कार की धूम—

जब हम भारत में आये तो बाबा ने कहना शुरू किया—"तुम तो हर गंगे हो", क्योंकि मेरा नाम पहले हरि था और मेरी सखी थी गंगा बहन। तो बाबा कहते थे—तुम तो पतित पावनी हो—क्या तुम्हें ये प्रेरणा नहीं आती कि जाकर मनुष्यों का कल्याण करें। इस प्रकार बार-बार प्रेरणा करके बाबा ने हमें ईश्वरीय सेवा पर भेजा और सर्व प्रथम हम गये

(शेष पृ० २९ पर)

ब्र.कु. जगदीश चन्द्र बोगोटा (कोलम्बया) में सेवाकेन्द्र पर विशिष्ट लोगों से मिलते हुए।

वरंगल में उद्योग प्रदर्शनी में विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उपकुलपति भ्राता वासुदेव राव जी।

कटक में आध्यात्मिक संग्रहालय के उद्घाटन समारोह में प्रवचन करते हुए भ्राता रघुनाथ पटनायक, वित्त मन्त्री, उड़ीसा। उन की बाईं चीफ जस्टिस भ्राता डी. पाठक जी विराजमान हैं।

कच्छ भुज में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन कच्छ के संसद सदस्य भ्राता महिपतराय महेता जी कर रहे हैं।

यवतमाल सेवा केन्द्र पर भारत के प्रसिद्ध रामायण प्रवचक स्वामी राजेश रामायणी को ब्र.कु. नलिनि श्रीकृष्ण का चित्र भेंट करते हुए। साथ में भ्राता सिंहानिया जी बैठे हैं।

सेवा समाचार (चित्रों में)

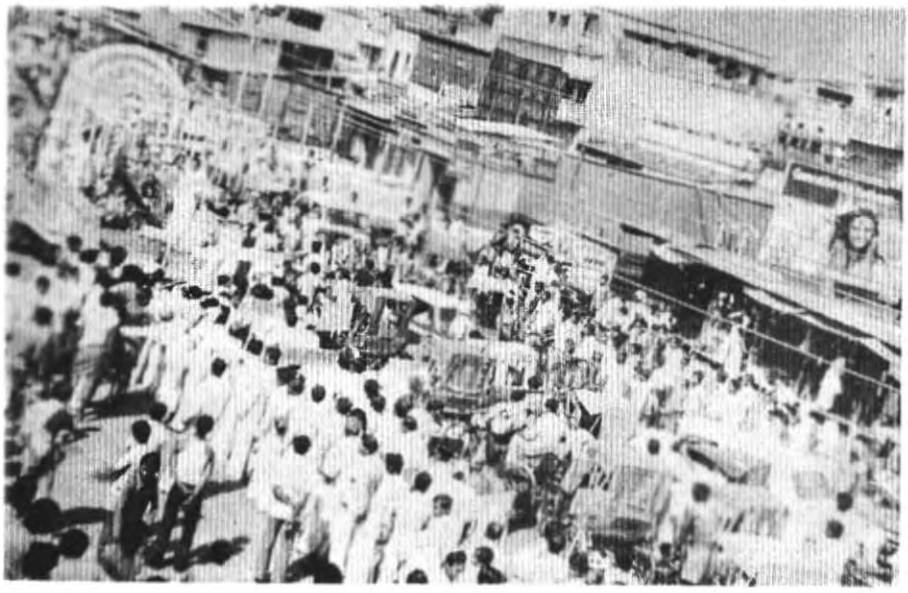

कालेज स्कवेयर (कटक) सेवाकेन्द्र द्वारा निकाली गई शोभा यात्रा का एक आकर्षक दृश्य।

लातूर सेवा केन्द्र पर आई.ए.स. कलैक्टर भ्राता हुसैनी जी अपने डिप्टी कलैक्टर भ्राता पवार के साथ पधारे। ब्र.कु. विजया शिव बाबा के चित्र की व्याख्या करते हुए।

सूरत सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजित विश्व शांति आध्यात्मिक प्रदर्शणी तथा झांकियों का भ्राता ठाकुरभाई नायक मोमबत्ती जगाकर उद्घाटन कर रहे हैं।

जगदल (प. बंगाल) में राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता ए.के.घोष, महाप्रबन्धक ज्यूट मिल।

हज़रतगंज (लखनऊ) में आधयात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् भ्राता प्रताप सिंह जी, चीफ इंजिनियर पी.डब्लयू.डी. को ब्र. कु. दादी भगवती जी चित्रों की व्याख्या के बाद साहित्य एवं प्रसाद भेंट करते हुए।

ब्रह्मा-तन में परमात्मा का अवतरण

ऐसी क्या परिस्थितियां थीं जो परम पुरुष परमात्मा को धरा पर लाने के निमित्त बनीं

गीता में भगवान के महावाक्य हैं कि "जब संसार में धर्म की अति ग्लानि होती है तब मैं धर्म की पुनः स्थापना और अधर्म के महाविनाश के लिए अवतरित होता हूं"। सोचने की बात है कि यहाँ 'धर्म' शब्द का क्या अभिप्राय है और 'धर्म ग्लानि' की क्या व्याख्या है अथवा 'अधर्म' किसे कहते हैं। यदि 'धर्म' शब्द का अर्थ 'धारणा' (सद्गुणों को अपनाना) है तो प्रश्न उठता है कि १९३०-४० के आस पास आध्यात्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और कलात्मक तथा सांस्कृतिक जीवन में कौन से सद्गुणों का ह्रास और दुर्गुणों का विकास हो गया था कि हम उसे ऐसी धर्म-ग्लानि का समय मान सकें कि जिसमें स्वयं परमपिता परमात्मा के आने की आवश्यकता हो ? यदि 'धर्म' का अर्थ 'कर्तव्य' मान लिया जाए और 'अच्छी जीवन-पद्धति' माना जाए तो इस युगांश में ऐसे क्या उग्र परिवर्तन हो गए थे कि विश्व के लिए खतरे की घण्टी बज उठी और स्वयं परमपिता परमात्मा को आना पड़ा ? यदि 'धर्म' का अर्थ 'विधि-विधान तथा 'नियम और अनुशासन' माना जाए जिनसे संसार में नियमितता (law and order) मर्यादा और सुख-शान्ति बने रहते हों तो ऐसे कौन से नियमों, अधिनियमों का कड़ा उल्लंघन होने लगा था कि स्वयं परम पुरुष को आकर मर्यादा का पाठ पढ़ाने की जरूरत पैदा हो गई ? यदि 'धर्म' शब्द 'पवित्रता' और 'शान्ति' का वाचक है तो ये दोनों कैसे अभूतपूर्व रीति से भंग हो गए थे कि अब इसके लिए कोई शक्तिशाली कदम उठाना ज़रूरी हो गया था ? वर्तमान समय में कलियुग अर्थात् पापाचार, अनाचार, अत्याचार आदि का युग तो है ही परन्तु इस कलि-काल में भी २०वीं सदी ई० और उसका भी पूर्वार्द्ध किस प्रकार से ऐसा समय है कि जिसमें आसुरी सम्पदा की इतनी वृद्धि और दैवी सम्पदा का इतना लोप हो जाता है और संसार में त्राहि-त्राहि हो जाती है कि स्वयं भगवान को आना पड़ता है ?

'धर्म' को 'अफीम' मानने वाले साम्यवाद की स्थापना

यों तो प्रथम विश्व-युद्ध से ही विश्व की परिस्थितियाँ स्थायी रूप से बिगड़ना शुरू हो गई थीं परन्तु वे उत्तरोत्तर उग्र रूप लेती गयीं। उदाहरण के तौर पर यों तो सन् १९१७ से ही विश्व में साम्यवाद (communism) ने अपना पहला कदम रूस में रखा और सन् १९२१ में रूस में नई आर्थिक नीति (New Economic policy) का प्रचलन हुआ परन्तु रूस ने अपना पहला संविधान सन् १९३६ में अपनाया। इस संविधान के अन्तर्गत धर्म के प्रचार की मनाही की गई और यह तो विश्व-प्रसिद्ध है ही कि साम्यवाद के प्रणेता, कार्ल मार्क्स ने धर्म को 'अफ़ीम' की संज्ञा दी है। सन् १९३६ में सोवियत रूस में साम्यवाद की नींव सुदृढ़ हो जाने के बाद तथा इंग्लैण्ड आदि देशों के द्वारा उनकी सरकार को मान्यता (recognition) मिलने के बाद अन्य देशों में भी नास्तिक सरकारें अथवा धर्म-विरोधी राज्य स्थापित होने का दरवाज़ा खुल गया। वास्तव में यह घटना इतने महत्व की थी कि जिसने आगे चलकर भयंकर रूप ले लिया और नास्तिकवाद को संसार में खुल्लम खुल्ला सरकारी मान्यता और सहायता मिलने लगी और विश्व दो सैनिक गुटों में बट गया जो जमकर एक-दूसरे का विरोध करने लगे। रूस में पांव जमाने के बाद साम्यवादी दल अन्यान्य देशों में भी धड़ाधड़ बढ़ने लगे। रूस की प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहायता से पोलैण्ड, हंगरी, युगोस्लाविया, रूमानिया, चैकोस्लोवेकिया, बलगारिया, पूर्वी जर्मनी, चीन, आदि-आदि देशों में फैलता गया और आज क्यूबा, लिबिया, अफ़गानिस्तान आदि-आदि देशों को मिलाकर काफ़ी

भू-भाग पर छाया हुआ है। यदि हम विश्व का मान-चित्र अपने सामने रखें तो पृथ्वी का एक बहुत बड़ा भाग 'लाल सलाम' करने वाले लाल झंडा लहराने वाले और कामरेड कहलाने वाले लोगों से ढका है जिनकी संख्या विश्व की कुल संख्या के एक तिहाई भाग से कम नहीं। विशेष बात यह है कि साम्यवाद विश्व में लाल क्रांति लाने के लिए खून बहाने की नीति को खुल्लमखुल्ला मानता है! गोया अहिंसा, जो धर्म का परम लक्षण है, साम्यवाद को मान्य नहीं। इस प्रकार सारे विश्व में हिंसक क्रान्ति का एक निरन्तर खतरा हर देश में बना ही हुआ है, जहाँ थोड़े से साम्यवादी लोग अथवा दल रूस से मदद लेकर अपना राज्य स्थापित करने को तैयार हैं।

परन्तु दूसरी ओर देश-देश में साम्यवादी सरकारों की स्थापना इस बात का प्रतीक है कि उस अवधि में सभी धर्म ऐसी स्थिति को पहुँच गए थे कि जिनमें अनैतिकता, निरर्थक रस्मों पर फिजूल खर्ची, शकुनवाद, कर्म-काण्डों की प्रधानता, अन्धविश्वास, धर्म के नाम पर बलि, पण्डों, पुजारियों, पदारियों का भौतिकवादी व्यवहार और अनाचार ही प्रधान था। तब धार्मिक असहिष्णुता के कारण परस्पर घृणा और द्वेष तथा लड़ाई-झगड़े, धर्म के नाम पर निर्धनों का शोषण और अभद्रता तथा जाति-पाति वाद, भेद-भाव और असह्य ऊँच-नीच जोर पकड़ गए थे। तब धर्म के वास्तविक तत्व का अभाव और उसके स्थान पर स्वयं धर्मावलम्बियों द्वारा हिंसा, निर्दयता, क्रूरता और स्वर्ग-नर्क तथा पाप-पुण्य की अस्पष्ट एवं धूमिल मान्यता को लेकर भोली अथवा आम जनता पर अनुचित लूट-खसूट मची हुई थी। जैसे शरीर में फोड़े फुन्सी निकलना शरीर की अस्वस्थता अथवा उसमें विषैले मादे के एकत्रित होने का सूचक है वैसे ही साम्यवाद को भी धर्म रूपी शरीर के पेट में जड़ोदार बड़ा फोड़ा (malignant ulcer) अथवा रसोली (tumour) अथवा धर्म रूपी मस्तिष्क का कैन्सर (brain-cancer) कहा जा सकता है। धर्म (वास्तव में अधर्म) ने ही साम्यवाद को जन्म दिया और अब साम्यवाद खोखले धर्म पर पराश्रयी (parasite) की तरह उसे खाने लगा और इस प्रकार समाज को एक प्राण-हर रोग ने घेर लिया। संसार भौतिकता से पीड़ित हो उठा। ईश्वर की चर्चा से लोग ऊब से गए। परमात्मा को वे सृष्टि का रचयिता मानने की बजाय उसे मनुष्य की कल्पना की रचना मानने लगे और कई पाश्चात्य दार्शनिक 'परमात्मा मर चुका है' (God is dead) यहाँ तक कहने की धृष्टता अथवा अशिष्टता पर उतर आये। गोया धर्म ने स्वयं अपने हाथों अपनी हत्या की, स्वयं अपने शत्रु को पैदा किया और पाला! इसे यदि 'धर्म ग्लानि' की स्थिति न कहें तो और क्या कहें? यदि धर्म का बीज ही नाश होने पर परमात्मा अवतरित हों तब फिर भला उसका आरोपण ही कैसे हो सकेगा? अतः उसके पूर्ण नष्ट होने से पहले का यही समय उचित था जब भगवान को आना पड़ा। वर्ना यदि सभी देशों की ऐसी स्थिति हो जाए कि भगवान का नाम लेने वालों की पुलिस में रिपोर्ट लिखवा दी जाए तो भला धर्म की पुनः स्थापना कैसे होती?

सचमुच, यह व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्तर पर नैतिक संकट का समय था। इस प्रसंग में अमरीका के तत्कालीन प्रधान फ्रेंकलीन रूजवेल्ट के ये शब्द उद्धृत करना समुचित होगा।

"इस बात को समझना और मानना जरूरी है कि व्यक्तिगत नैतिकता की तरह राष्ट्रीय नैतिकता भी बहुत जरूरी है।"

अमरीका के प्रधान ने यह वाक्य इसलिए कहा था कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार में तब नैतिकता बुरी तरह से घायल हो चुकी थी। उस समय कई देशों के कई अनैतिक एवं हिंसात्मक व्यवहार को देखकर रूज़वेल्ट ने यह भी कहा था कि हिंसक राष्ट्रों अथवा नेताओं को 'क्वारनटाइन' (Quarantine) में डालने की ज़रूरत है" परन्तु ऐसा कर कौन सकता था। बाद के वृतान्तों से स्पष्ट है कि कोई भी माननीय संगठन यहाँ तक कि लीग आफ नेशन्स (league of nations) अथवा राष्ट्र संघ भी इसके विषय में कुछ नहीं कर सकते थे और लोग अब इस बात को महसूस करने लगे थे कि संसार में अनैतिकता और खलबली बढ़ रही है और अब इसको सुधारना मनुष्य के लिए असंभव होता जा रहा है गोया अदृष्ट-पूर्व-ग्लानि की स्थिति है।

२ अकारण ही उग्र हिंसा

इतिहास इस बात का साक्षी है कि यद्यपि प्रथम

विश्व युद्ध में जान और माल की अगण्य हानि हुई थी और यद्यपि उसके बाद ऐसे विधि-विधान और साधन तथा संगठन भी बनाए गए थे कि जिससे भविष्य में ऐसी लड़ाई को रोका जा सके तथापि मानव-समाज ने उन अत्यन्त दुखदायक वृत्तान्तों से कोई नैतिकता का पाठ नहीं पढ़ा था। इतिहास इस बात को प्रमाणित करता है कि हिटलर ने सन् १९३५ में किस प्रकार वारसेल्स के समझौते को (Treaty of varseilles) को भंग करके सन् १९३६-३८ के बीच आस्ट्रिया पर कब्ज़ा कर लिया और ज़ेकोस्लेवेकिया और पोलैण्ड को ले लिया और इसके पश्चात बिना किसी शिकायत अथवा कारण के नेदरलैण्ड, बेल्जियम, डेनमार्क और नार्विया आदि देशों को भी हड़प कर लिया। यद्यपि बेल्जियम देश ने बहुत पहले ही से अपनी निष्पक्षता (Neutrality) घोषित की हुई थी। इतना ही नहीं, इसके बाद कोई बहाना बताये बिना ही जर्मनी की फौजें पेरिस में घुस गई और उन्होंने रोमानिया, हंगरी, युगोस्लाविया, नार्थ अफ्रीका, यहां तक कि रूस पर भी आक्रमण कर दिया।

इसी प्रकार इटली के प्रधान मसोलिनी ने पाठ्यक्रम में परिवर्तन करके स्कूलों में विद्यार्थियों के लिए यहाँ तक कि ६ वर्ष के बच्चों के लिए भी सैनिक शिक्षण देना प्रारम्भ करा दिया और सन् १९३५ में यूथोपिया और सन् १९३८ में अल्बानिया देश पर कब्जा कर लिया।

ऐसा ही व्यवहार जापान ने अपनाया। सन् १९३१ में जापान ने मानचूरिया पर आक्रमण किया और उस पर कब्जा करने के बाद सन् १९३७ में उसकी फ़ौजें चीन में घुस गईं। और वहाँ हत्या लूट खसूट का ऐसा चक्र चलाया कि लाखों लोग चीन से भागकर दूसरे देशों में शरणार्थी हुए। वहाँ काफी इलाका अपने कब्जे में करते हुए जापान ने पर्ल हार्बर (Pearl Harbour) पर भी आक्रमण किया और फिलीपीन, मलाया, जावा, सुमात्रा आदि पर वह अपना कब्जा करता गया और आस्ट्रेलिया के लिए भी खतरा पैदा कर दिया।

सोवियत रूस भी किसी से पीछे नहीं रहा। उसने पोलैण्ड का कुछ हिस्सा जर्मनी से लेते हुए लेथूरिया, एस्टोरिया और लाटविया आदि देशों पर कब्जा कर लिया और फिनलैण्ड पर आक्रमण करके उसका भी काफी भू-भाग हथिया लिया और द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद अनेकानेक देशों में अपने प्रभाव के अन्तर्गत साम्यवादी सरकारें स्थापन कर दीं।

इस प्रकार उन दिनों हिंसा, जो कि धर्म ग्लानि का एक मुख्य चिह्न है, भू-मण्डल पर चारों ओर यूरोप, एशिया, अफ्रीका आदि-आदि में उग्र रूप से फैल गई थी। पुनश्च, जर्मनी, इटली, स्पेन, हंगरी, बल्गारिया, लाटविया, लिथूरिया, एस्टोरिया, यूनान, रोमानिया, युगोस्लाविया, तुर्कीस्तान आदि-आदि देशों में डिक्टेटरशिप अथवा तानाशाही छा गई थी। सन् १९३६ में जर्मनी और इटली ने 'रोम-बर्लिन-एक्सिस' (Rome-Berlin-Axis) नामक गठजोड़ बना लिया था और जापान, स्पेन, हंगरी इत्यादि से मिलकर कम्यूनिस्ट-विरोधी संगठन बनाया था। इस प्रकार शान्ति जो कि धर्म की सहगामी है, नष्ट हो चुकी थी और सारे भूमण्डल पर तनाव का सा वातावरण था। हर जगह पर लोग द्वितीय विश्व युद्ध और उससे होने वाले अपार दुःखों की चर्चा कर रहे थे।

स्वयं भारत में भी ज़ोरदार राजनीतिक उथल-पुथल हो रही थी। बहुत बड़े पैमाने पर भारत की जनता अंग्रेजी शासन का विरोध एवं असहयोग तथा सरकारी अत्याचारों के विरुद्ध प्रदर्शन, हड़ताल, जलूस, 'जेल भरो' इत्यादि अभियान या देशी सरकार कायम करने में लगी हुई थी और इस प्रकार सारे देश में हलचल मची हुई थी, यहाँ तक कि स्कूलों और कालेजों के विद्यार्थी और सामान्यतः राजनीति में भाग न लेने वाली महिलायें भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके थे।

फिर, इसी काल में ही विषैली गैस, दूर से गोलाबारी करने वाले टैंक और हवा से हमला करने वाले जहाज भी बनने और प्रयोग होने शुरू हुए थे। सैनिक इतिहास में पहली बार बीसवीं सदी के चौथे दशक में एक शहर से तोप चलाकर दूर स्थित दूसरे शहर पर —जैसे कि बर्लिन से ७० मील दूर पेरिस पर— गोलों की वर्षा की गई थी। इसी प्रकार सन् १९४५ में पहली बार १००० हवाई जहाजों ने टोकियो पर आक्रमण किया। परन्तु सबसे अधिक भयावह बात

तो यह है कि एटम बम—जैसे महाविध्वंसक अस्त्र सन् १९३० और ४५ के बीच ही बनाये गये थे। इतिहास में इससे पहले कभी भी इतने शक्तिशाली और विनाशकारी अस्त्र न बनाए गए थे और न प्रयोग किए गए थे। इस अस्त्र ने तो लड़ाई की रूप-रेखा ही पलट दी और विश्व में सैनिक शक्तियों का ढांचा ही बदल दिया। अब तो जिस देश के पास आणविक शस्त्र हों, वही ठीक माना जाने लगा। एक ओर राष्ट्र संघ में वीटो का और दूसरी ओर अस्त्र भंडार में अणु बम होने के कारण सत्ता के मद में चूर देशों ने अब नैतिकता का पालन करना और नैतिक सिद्धांतों को सामने रखना ही छोड़ दिया। इस प्रकार विश्व में उच्चतम स्तर पर नैतिक संकट पैदा हो गया।

३ विश्व-युद्ध, विश्व-अशान्ति और विश्व भर में दुःख आदि की चर्चा

हज़ारों वर्षों में पहली ही बार लोग गम्भीरता पूर्वक विश्व-युद्ध और विश्व अशान्ति की समस्या की चर्चा करने लगे थे। जबकि इससे पहले वे हमेशा वैयक्तिक अशान्ति की चेष्टा अभिव्यक्त किया करते। अब विश्व पहली बार ही दो गुटों में बंट गया था। और उन्होंने अपनी फौजों का मुख्य प्रधान सर्वोच्च कमान्डर आइज़न होवर को यूरोप में और जनरल मैकारथर को एशिया में नियुक्त कर दिया था और लड़ाई में अब ऐसी उग्रता आ गई थी कि अब इन्हें आणविक अस्त्र बनाने व सैनिक संगठन तैयार करने से कोई रोक नहीं सकता था। अतः अब ही यह समय था कि तीसरे विश्व-युद्ध अथवा आणविक युद्ध द्वारा संसार का एक बहुत बड़ा भू-भाग नष्ट होने से पहले मनुष्य के मनोपरिवर्तन का कार्य प्रारम्भ किया जाए। अतः १९३०-५० के बीच ही का समय ऐसा समय था जब परमात्मा अवतरित हो और एक ओर लड़ाई से परेशान मनुष्यों को आने वाली सतयुगी दुनिया की आशा बंधाए और दूसरी ओर खून के प्यासे और मिथ्या आशा लगाने वाले लोगों को आणविक शस्त्रों द्वारा विध्वंस की चेतावनी दे और जितने मनुष्य पाप और पतन के मार्ग से बचना चाहें तो उन्हें बचाए।

देखा जाए तो सही अर्थों में तो यह कल्पनातीत दुःख दर्द और मारकाट और विध्वंस का समय था। इस विश्व-युद्ध में लगभग 1½ करोड़ लोग मरे या जख्मी हुए होंगे। अरबों खरबों रुपयों की सम्पत्ति नष्ट हुई होगी और लोग घर बेघर हो गए होंगे।

एक बहुत घिनौनी बात यह है कि इन्हीं दिनों नाज़ियों ने यहूदियों पर बहुत अत्याचार किए। हज़ारों-लाखों को गैस चेम्बर में बन्द करके मार डाला। सख्त सर्दी में नर नारियों को नंगा होकर पंक्तियों में चलने को मजबूर किया। उन्हें भूखा मारते हुए उनसे जान तोड़ काम कराया। क्या यह सब दुःख, अत्याचार और दानवी व्यवहार अति धर्म ग्लानि के चिह्न नहीं हैं?

इन्हीं दिनों में तो इसी अवधि में ही दक्षिणी अफ्रीका में काले और गोरे लोगों में नस्ली भेद ने उग्र रूप धारण किया। और भारत वर्ष में भी हिन्दु और मुसलमानों में दंगे होने लगे। क्या ये देहाभिमान और धार्मिक असहिष्णुता के चिन्ह नहीं थे?

इन्हीं दिनों की एक मुख्य समस्या शरणार्थियों की समस्या थी। लाखों लोगों को यूरोप आदि शरणार्थी शिविरों में रखा गया। इनमें बहुत-से ऐसे बच्चे भी थे जिन्हें न अपने माता-पिता का मालूम था न देश का। इनमें बहुत से लोग ऐसे भी थे जो अपने देश में बार-बार लड़ाई और अत्याचार देखकर भाग उठे थे। इन लाखों लोगों को भोजन, वस्त्र और स्थान देने की समस्या कोई छोटी समस्या नहीं थी। ये शरणार्थियों की समस्या तो विश्व की एक स्थाई समस्या बन गई। भारत के राजनीतिक बटवारे के समय भी लाखों लोग अपने देश को छोड़कर बेघर और बेरोजगार हो गए और हजारों की संख्या में लोगों को लूट लिया गया और कत्ल कर दिया गया। यहाँ तक कि बच्चों और बूढ़ों को भी नहीं छोड़ा गया। नारियों से बलात्कार किया गया और कितने ही लोगों पर अकारण अत्याचार किया गया। इस प्रकार सारा संसार त्राहि-त्राहि कर उठा।

लड़ाई के दिनों में सेनाओं ने भी कोई कम पाप नहीं किए। उन्होंने भी वहाँ-वहाँ के देशों की नारियों के साथ बलात्कार किये। खूब शराब उड़ाई। लड़ाई के बाद भी देशों के लाखों युवकों की मृत्यु हो जाने के कारण यूरोप के बहुत-से देशों में नारियों में भ्रष्टाचार और वैवाहिक कुरीतियाँ फैल गईं। यौन-

स्वच्छन्दता फैल गई। पवित्रता नाम का गुण ही न रहा। नर-नारियों की दृष्टि और वृत्ति भटक गई। घर-घर वेश्यालय बनने लगा। इस प्रकार पतित को पावन करने वाले परमात्मा के अवतरण का यही अनुकूल समय था।

४ अभूत पूर्व आर्थिक संकट

अचानक ही अक्टूबर १९२९ में न्यूयार्क का स्टाक एक्सचेन्ज क्रैश (Crash) कर गया और अमरीका में धन की बहुत हानि हुई। इसके परिणामस्वरूप तुरन्त ही सारे विश्व में अभूतपूर्व आर्थिक संकट हो गया। जिन लोगों को आर्थिक क्षति हुई, उनके पास खर्च करने को धन न रहा। कारखानों के मालिकों और ठेकेदारों ने अपने कर्मचारियों की छुट्टी कर दी। रोज़गार खो बैठने के कारण लोगों की क्रय शक्ति और कम हो गई। अतः किसान अपनी पैदावार का अच्छा खासा हिस्सा न बेच सके और इसलिए चीजों के भाव बुरी तरह गिर गये? पैसे का मूल्य बहुत कम हो गया। अमरीका के धनी लोग जिन्होंने दूसरे देशों में पैसा उधार दिया हुआ था, वे अपनी ऋणियों से उधार वापस मांगने लगे और आगे उधार देना बन्द कर दिया। इससे सारे विश्व में आर्थिक कठिनाइयाँ पैदा हो गयीं। बेरोजगार हुए बहुत-से लोग रोजगार के लिए मिलिट्री में भर्ती होने लगे। इससे विश्व में तनाव होने लगा और देश लड़ने के लिए अधीर होने लगे।

इसके अतिरिक्त १९३०-४५ के बीच जो विश्व-युद्ध हुआ उसमें आम प्रयोग की वस्तुओं का निर्माण बन्द हो गया। शान्ति के समय प्रयोग होने वाली वस्तुओं का बनाना रोक कर कारखानों ने गोला-बारूद और लड़ाई का सामान बनाना शुरू कर दिया। उसके कारण आवश्यक चीजों की कमी होने लगी। इसके अतिरिक्त बहुत-से देशों ने अन्य देशों से बहुत ऊँचे दर पर ऋण ले लिये। इन दोनों कारणों से तथा लड़ाई के कारण कर (Tax) बढ़ जाने से चीजों के दाम दिनोंदिन बढ़ते ही चले गए। इससे पूर्व कभी भी इतने थोड़े काल में वस्तुओं के भाव इतने नहीं बढ़े थे और इसके बाद तो चीजों के दामों का बढ़ना मानों रुका ही नहीं। बहुत से देशों ने तो अतिरिक्त नोट छाप लिए और आर्थिक ढांचे में हेरा-फेरी करने की कोशिश की। परन्तु उनका आर्थिक ढाँचा नीचे धंसता ही चला गया और उनके पैसे की कीमत बहुत कम हो गयी। बहुत-से देशों ने घाटे के बजट (Deficit Budget) बनाने शुरू किये। इससे अन्य प्रकार की आर्थिक विषमताएँ पैदा हुईं। इस प्रकार बेरोज़गारी, मूल्यों में वृद्धि, चोर बाज़ारी, संग्रह-प्रवृत्ति (Hoarding), कर-चोरी (Tax evasion), बड़े-बड़े उधार (Huge debts), साधारण प्रयोग की चीज़ों की कमी, इत्यादि ने नये-नये आर्थिक प्रश्न पैदा कर दिये। और इनके कारण बहुत-से नये आर्थिक अपराध होने लगे। आर्थिक मामलों में लोगों का नैतिक पतन होने लगा। और, आर्थिक कठिनाइयों और अस्थिरताओं ने देशों में उग्रवादिता को भड़काया और उन्हें दूसरे देशों पर आक्रमण करने लिए उकसाया।

इसके अतिरिक्त, विश्व-युद्ध जो कि पहले के सभी युद्धों से अधिक खर्चीला था, ने देशों की कमर तोड़ दी। युद्ध के दिनों में लहलहाती फसलें नष्ट हो गयीं। उगते पौधे रोंद दिए गए। बाँध, पुलें, पावर हाउस, कारखाने ध्वस्त कर दिए गए। सड़कें, रेल की पटरियां, घर, नष्ट कर किए गए। और काम में आने वाली चीज़ों की उपज तो कम हो ही गयी। अकेले फ्रांस, जिससे अधिक और देशों को क्षति हुई थी, में २१०००,०००,००० डालर की सम्पत्ति नष्ट हो गयी। नीदरलैण्ड देश की एक तिहाई सम्पत्ति मिट्टी में मिल गयी अथवा जलकर राख हो गयीं। जर्मनी, अमरीका, इंग्लैण्ड, इटली, फ्रांस, जापान, बेल्जियम, हंगरी, पोलैण्ड, हालैण्ड, नार्वे, स्वीडन, चीन इत्यादि देशों को बहुत ही आर्थिक क्षति हुई। इससे अनेक देशों की सरकारें भी कमजोर हो गयी और अनेक देशों में अवैधानिकता (Law lessness) सी फैल गयी। इस प्रकार धर्म-संकट के साथ अर्थ-संकट भी आ बना और आर्थिक व्यवहार और व्यापार में अनैतिकता ने सदा के लिए स्थान बना लिया।

५ पूंजीपति वाद और पुरानी अर्थ-प्रणाली के बारे में फैसला

इन कठिन आर्थिक परिस्थितियों में, जबकि लाखों लोग बेरोजगार थे, बहुत से देशों को लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा (Social security) का और रोज़गार का प्रबन्ध करना पड़ा। उदाहरण के तौर पर लड़ाई के परिणामस्वरूप ईस्ट इन्डिज़ पर अपना साम्राज्य गंवा बैठने के कारण, ईस्ट इन्डिज में जो ४ लाख हालैण्ड के नागरिक काम करते थे, वे वापस आने पर बेरोज़गार हो गए। अतः अब एक प्रश्न तो यह था कि पुराने पूंजीपतिवाद का क्या होगा। अब बदली हुई परिस्थितियों में पूंजीवादी सरकारों को भी कई समाजवादी कदम उठाने पड़े। बहुत से देशों ने प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ही वहाँ के बड़े-बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करके उन्हें सरकार के अधिकार में ले ही लिया था परन्तु अब लड़ाई के बाद आगे के लिए स्थायी रूप से अपने देश की आर्थिक जिम्मेवारी और लोगों की सामाजिक सुरक्षा अपने जिम्मे ले ली। इस प्रकार 'धर्म' के अतिरिक्त 'अर्थ' में भी मौलिक परिवर्तन हुए। परन्तु विशेष बात तो यह है कि अब अर्थ के क्षेत्र में नैतिक मूल्यों को गौण अथवा नगण्य स्थान मिलने लगा।

६ आर्थिक और सैनिक अपराध

इन विश्व युद्धों का एक दुष्परिणाम यह हुआ कि बहुत-से देशों में विधि-विधान और अनुशासन मिट गया और खलबली मच गई। लड़ाई के दिनों में चोर बाज़ारी, रिश्वत, मिलावट और इस प्रकार के दूसरे अपराध होने लगे थे क्योंकि अनाज और प्रतिदिन के प्रयोग की अन्य ज़रूरी वस्तुएँ जैसे कि मिट्टी का तेल, कोयला, सीमेंट आदि कम थे। इन कारणों से व्यक्तिगत जीवन में तथा समाज में नैतिकता का काफ़ी ह्रास हो गया। लोगों ने सोचा कि अब ही जल्दी से अमीर बनने का समय है। जिन सेनाओं ने दूसरे देशों पर आक्रमण किया उन्होंने भी वहाँ लोगों की निजी सम्पत्ति को लूटा, नारियों से बलात्कार किया और बर्बरता से लोगों से व्यवहार किया। लड़ाई के बाद भी ये अनैतिक कर्म प्रचलित रहे। और अबलोगों ने इनका होना स्वाभाविक मान लिया जबकि पहले वे ऐसे कामों की स्पष्ट शब्दों भर्त्सना किया करते थे।

इसके अतिरिक्त, बहुत-से देशों की सरकारों ने, जो अपने देश के लोगों से या अन्य देशों से बड़े-बड़े ऋण लिये थे वो भी, लड़ाई बन्द होने पर, वापस नहीं चुकाये। इससे ऋण न चुकाने और वचन तोड़ने की आदत बनने लगी।

पुनश्च, इस युद्ध के दौरान नगरवासियों पर भी काफ़ी आक्रमण किये गये। अस्पताल और पूजा के स्थानों को भी नहीं छोड़ा गया। पहले तो लड़ाइयाँ शहर से बाहर मैदानों में हुआ करती थीं परन्तु अब पहली बार यह लड़ाई शहर के आबाद इलाकों में लड़ी गयी। और इसमें पब्लिक के लिए बिजली, पानी जैसी आवश्यक सेवाओं को भी आक्रमण का निशाना बनाया गया। किन्हीं दो देशों के बीच जो ऐसा इलाका होता है जिस पर दोनों देशों का राज्य नहीं होता (No man's land) उसके बारे में प्रचलित मान्यताओं का भी उल्लंघन किया गया और लड़ाई के लिए चुनौती या पूर्व-सूचना देने की मर्यादा भी भंग की जाने लगी।

न केवल लड़ाई के कारण घोषित किए गए बल्कि उन देशों पर भी आक्रमण किया गया जिनसे लड़ाई करने का कोई भी कारण उपस्थिति नहीं था और जिन्होंने कोई भी उत्तेजनादायक काम नहीं किया था। इस प्रकार 'युद्ध-धर्म' अथवा युद्ध-सम्बन्धी नींव का भी स्पष्टतः और सीना तान कर उल्लंघन किया गया। जिन देशों का लड़ाई से कोई वास्ता नहीं था, उनके भी समुद्री जहाज डुबो दिए गए! इस प्रकार युद्ध-सम्बन्धी नैतिक नियमों का न केवल उल्लंघन किया गया बल्कि देशों के साथ अपने हस्ताक्षर से जो समझौते किए हुए थे, उन्हें भी रद्दी कागज़ मान लिया गया और देशों ने मिलकर जो लीग आफ़ नेशन्स जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बनाए थे, उनकी भी बात नहीं सुनी गई और परवाह भी नहीं की गई।

७. जीवन-प्रणाली में तीव्र गति से परिवर्तन और फैशनों की भरमार

प्रथम विश्व-युद्ध से पहले अमरीका जैसे विकसित (Advanced) देशों में भी बहुत-से लोगों ने हवाई

जहाज़ देखे थे और न ही वे कार में चढ़े थे—यह बात कुछ लोगों को अजीब लगती होगी परन्तु यह है बिल्कुल सत्य। तब संयुक्त राष्ट्र अमरीका में न रेडियो थे न टी० वी० और न बिजली से काम करने वाली कपड़ा धोने की मशीनें। बहुतों को यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि तब अमरीका के अधिकतर घरों में न स्नान घर थे न टेलीफोन। तब वहाँ लोग मिट्टी के तेल के लैम्प जलाकर घर में रोशनी करते थे और लकड़ी या कोयला जलाकर खाना बनाते या घर को गरम करते थे। आज भी अमरीका, इग्लैंड तथा यूरोप के बहुत-से देशों में घरों की छतों पर बनी धुएं की चिमनियाँ देखी जा सकती हैं जो इस बात की याद दिलाती हैं कि पहले इन घरों में लकड़ी या कोयला जलाए जाते थे।

तब तक उन सब प्रगतिशील देशों में भी महिलाओं की पोशाक ऐसी होती है कि वह नीचे ज़मीन को स्पर्श करती थी और मुश्किल ही कोई नारी ऐसी होती होगी जो बालों को कटाकर छोटे बाल रखने का साहस करती थी। तब शारीरिक बनाव-शृंगार के बहुत ही कम साधन (Cosmetics) प्रयोग होते थे और हर आये दिन फैशन भी नहीं बदलते थे जैसे कि बाद में बदलने लगे। बहुत-से फैशन, जिनमें नारी शरीर को अधिक-से-अधिक नग्न रखा जाता, बनावटी सौन्दर्य के अनेक साधन आदि-आदि सन् १९२० और १९५० ही के बीच अभूतपूर्व रीति से बदले। इन्हीं दिनों रेयान, नायलान, आरलोन आदि जैसे नये प्रकार के कपड़े, प्लास्टिक, फौलाद जैसा मज़बूत शीशा आदि-आदि दबादब बाजारों में आये और संसार में खूब चड़क-भड़क, रंगीनी और फैशन की बाढ़ आ गयी। खूब होटल और रेस्टोरन्ट खुलने लगे खाने-पीने, पहनने, आतिथ्य आदि की पुरानी मर्यादाएं एकाएक बदल गयीं और उनके स्थान पर नये रीति-रिवाज और नये सामाजिक मूल्य प्रस्थापित हुए। उन्हीं दिनों ही विज्ञापनों और इश्तहारों में नारी के भद्दे प्रदर्शन, शादी के बारे में समाचार पत्रों में विज्ञापन, पुरुषों और नारियों के अतीव स्वच्छन्द मेल-मिलाप आदि होने लगे और इन तथा अन्य कारणों से अवैध बच्चे, अधिक तलाक आदि होने लगे और घरेलू जीवन टूटने लगा तथा विषय-वासना को बढ़ावा मिलने लगा। अतः अब जनता को कमल पुष्प के समान पवित्र जीवन बनाने की मार्गदर्शना का देना ज़रूरी था।

८. सिनेमा और प्रसार के साधनों से पैदा हुई स्थिति

प्रथम युद्ध से पहले अमरीका—जैसे देशों के भी बहुत-से लोगों ने सिनेमा नहीं देखा था और कुछेक ने देखा भी था तो बहुत ही कम फिल्में देखी थीं। सन् १९३०-५० के बीच ही इनकी संख्या बढ़ने लगी और अधिकाधिक संख्या में लोग इन्हें देखने लगे। रेडियो का प्रयोग, सूचना, समाचार और मनोरंजन के लिए इसी अवधि में ही शुरू हुआ और बढ़ता गया। सरकारी तौर पर टी० वी० का प्रयोग तो पहली बार १९३८ ही में हुआ। अब इन सब साधनों ने लोगों के सोचने-विचारने-बातचीत करने, खाने-पीने और रहने-सहने के तरीकों और उनके नैतिक पक्ष पर बहुत ही गहरा प्रभाव डालना शुरू किया। कुछ ही वर्षों में करोड़ों लोगों ने समाचार सुनना, टी०वी० पर मनोरंजन के प्रोग्राम देखना और सिनेमा घरों में हर तरह की फिल्में देखना शुरू किया जिससे उनके चरित्र में बहुत परिवर्तन आने लगा। प्रसार और मनोरंजन के इन साधनों ने जो स्थिति पैदा की थी, वह पहले कभी नहीं थी। लोग सतसंगों में कुछ भी समय लगाने की बजाय टी० वी० और फिल्म देखने में अधिक समय ख़र्च करने लगे। अतः फिल्मों के बढ़ते प्रभाव का सामना करने के लिए अब शक्तिशाली आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता थी क्योंकि फिल्मों में अश्लीलता, हिंसा आदि तत्वों की मात्रा दिनोंदिन बढ़ती ही चली गयी।

इन प्रसार-साधनों का दूसरा पहलू यह भी था कि अब इन द्वारा ईश्वरीय संदेश भी जल्दी-जल्दी और एक साथ बहुत अधिक संख्या में लोगों को दिया जा सकता था। अतः इस दृष्टिकोण से भी लोगों को ईश्वरीय ज्ञान देने के लिए यह उपयुक्त समय था ताकि जब इन सार्वजनिक प्रसार-साधनों द्वारा इतनी अधिक सांसारिक बातें सुनाई जा रही थी तब लोगों को सत्य का बोध कराने की कुछ तो तैयारी की जाए।

९ यातायात के साधनों में महत्त्वपूर्ण प्रगति

इन्हीं दशकों में अब हवाई-यात्रा का युग भी शुरू हो गया था। पहली बार ही हवाई जहाज़ द्वारा इंग्लिश चैनल (English channel) को पार किया गया था तथा अब कई पाश्चात्य आदि देशों में पूर्व-निश्चित रूप से होने लगी थी। सन् १९३१ में पहली बार प्रशान्त महासागर को पार किया गया और सन् १९३३ में पहली बार हवाई जहाज़ द्वारा विश्व का चक्र लगाया गया। अब रेडार जिसे जादुई आँख (Magic Eye) भी कहा जाता था, को प्रयोग में लाया जाने लगा। हवाई व समुद्री जहाज़ जो पहले धुंध और अंधेरे में पहाड़ों व ऊँची इमारतों को नहीं देख सकते थे अब रेडार द्वारा देखने में समर्थ हुए। अत: अब रेडार के प्रयोग के कारण हवाई यात्रा में ख़तरा बहुत कम हो गया और यह यात्रा का सुविधा-जनक और तेज़ साधन होने के कारण एक देश के लोग अन्य अनेक देशों में भ्रमण अर्थ जाने लगे और इसके द्वारा वे अनेक तौर-तरीकों और संस्कृति को प्रभावित करने लगे तथा उन द्वारा प्रभावित होने भी लगे। अब टेलीफ़ोन, टी.वी., रेडियो, हवाई यात्रा आदि-आदि के द्वारा विश्व छोटा लगने लगा क्योंकि इन साधनों के कारण समय की दूरी अब मिट सी गई। पूर्व जो अपनी आध्यात्मिक विरासत के कारण लोक प्रसिद्ध था, अब पाश्चात्य के भौतिक दर्शन और भौतिकवादी सभ्यता से तीव्र गति से प्रभावित होना शुरू हुआ और अब पूर्वी देशों के सोचने-विचारने, खाने-पीने, रहने-सहने और पोशाक आदि के तरीकों में बड़े पैमाने पर परिवर्तन होने लगे। अत: यही समय था जब एक प्रकार से साँस्कृतिक उथल-पुथल हो रही थी और लोगों के दृष्टिकोण तथा तौर तरीकों में विशाल परिवर्तन हो रहे थे, तब ईश्वरीय ज्ञान की स्पष्ट आवश्यकता थी।

१० विज्ञान और उस द्वारा आविष्कारों में वृद्धि

बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में आइनस्टाइन द्वारा प्रशस्त किए गए सिद्धान्त काफी हद तक स्वीकृत हो गए और इनसे लोगों को एक नया विश्व-दर्शन मिला। तीन दिशाओं के अतिरिक्त अब समय को चौथी दिशा माना गया।

शल्य विद्या (Surgery) (Anaesthetics) के ज्ञान में भी अब काफी वद्धि हुई। अब एक्सरे (X-ray) का भी प्रयोग होने लगा। तपेदिक (T.B.) शर्करा (Diabetes) तथा केन्सर (Cancer) आदि बीमारियों का मुकाबला करने के लिए शोध कार्य की वृद्धि होने लगी और संक्रमण (Infection) रोगों को रोकने के लिए अद्भुत दवाइयों (Wonder drugs) का भी आविष्कार हुआ। इनमें से मुख्य थी सुल्फ़ा जो १९३५ में प्रयोग होने लगी और इसके बाद पेन्सीलिन जैसी मुख्य दवाइयाँ भी निर्मित हो गयीं।

अन्य क्षेत्रों में भी विज्ञान ने बहुत प्रगति की और नये-नये आविष्कार किए जिससे पुराने मन्तव्यों और विचारों में काफ़ी परिवर्तन आ गया। विशेषकर कार्ल मार्क्स, डारविन, सिग्मंड फ्रायड और आइन-स्टाइन के विचारों ने संसार को बहुत प्रभावित करना शुरू किया। इनमें से प्रथम तीन के विचारों के कारण पुराने आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को काफ़ी क्षति पहुँची और उनका स्थान अब भौतिक मूल्य स्वच्छन्दता और विकासवाद आदि लेने लगे। अब परमात्मा को विश्व का रचयिता मानने और शरीर में आत्माओं का अस्तित्व मानने की बात खत्म होने लगी और लोग इतिहास को कुछ हजार वर्ष पुराना मानने की बजाय लाखों करोड़ों वर्ष पुराना मानने लगे। अत: अब इस समय इस बात की जरूरत थी कि अब मनुष्य मात्र को सही विश्व दर्शन, देश (Space) और काल (time) का सही परिचय और इतिहास की सही एवम् आध्यात्मिक व्याख्या तथा इतिहास के दौर का सही बोध कराया जा सके। अब स्वयं भगवान द्वारा सत्यता का प्रकाश किये जाने की आवश्यकता थी और इसके लिए स्वयं परमात्मा को एक मानवीय तन में प्रवेश करके उसे अपना माध्यम बनाना ज़रूरी था।

प्रजापिता ब्रह्मा के मानवी तन में १९३६ के आस पास परमात्मा के आने के बारे में और भी बहुत से कारण बताये जा सकते हैं जो इस विषय को और स्पष्ट कर सकते हैं परन्तु यहाँ जिन तथ्यों का उल्लेख किया गया है, वे मुख्य कारण हैं।

बिलासपुर सेवा केन्द्र के संग्रहालय पर बिलासपुर कलैक्टर भ्राता डॉ. वी.के. चौधरी जी को ब्र.कु. गीता चित्रों पर व्याख्या करते हुए।

वार्शी में राजन टैक्सटाइल मिल में आयोजित चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन मिल के जनरल मैनेजर दीप प्रज्वलित कर के कर रहे हैं।

शक्तिनगर (देहली) सेवाकेन्द्र की ओर से किंगज़वे कैम्प में पदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् क्षेत्रीय पार्षद भ्राता चन्द्रमोहन जी को ब्र.कु. सुधा चित्रों पर समझाते हुए।

दाजिलिंग में म्यूनिसिपल चेम्बर हाल में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर एस.पी. भ्राता ए.के. गुप्ता जी लिटेचर का अवलोकन करते हुए।

हिसार में ब्र.कु. सावित्री हिसार के एस.एस.पी. भ्राता विजय नरेश नेगी को सौगात देते हुए।

बलसाड़ सेवा केन्द्र द्वारा पारडी में आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर पारडी बैंक मैनेजर भ्राता जनुभाई देसाई प्रवचन करते हुए। मंच पर अन्य भाई बहिनें बैठे हैं।

महू में आयोजित विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन पश्चात् अनुविभागीय अधिकारी अमरसिंह अपने विचार लिखते हुए।

पानीपत में हुए रोटरी क्लब में कार्यक्रम में प्रवचन करते हुए बम्बई के भ्राता डॉ. गिरीश पटेल।

← मालेगांव में मेले के उद्घाटन अवसर पर ब्र.कु. पार्वती बहिन दादा साहेब पोतनीस को श्रीकृष्ण का चित्र भेंट कर रही हैं।

सोलन में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए → राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के प्रिंसिपल कुमार सिंह सिसोदिया।

← बटाला में चरित्र निर्माण राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता राम गोपाल चतुर्थ, दाई ओर अनाज मंडी एसोसिएशन के चेयरमैन तथा सभी व्यापारी खड़े हुए।

हासपेट में आयोजित चरित्र निर्माण आध्यात्मिक → प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर म्यूनिसिपल कमिश्नर भ्राता मोहम्मद मोयिन अली मंच पर प्रवचन करते हुए। साथ में बैंक मैनेजर नागराज तथा ब्र.कु. बहिन भाई बैठे हैं।

← जीन्द में ईश्वर नगर कालोनी में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन हरियाणा रोडवेज, जींद के जनरल मैनेजर भ्राता जे.पी. कौशिक टेप काटकर कर रहे हैं।

जालना शहर में प्रदर्शनी → उद्घाटन के पश्चात् ब्र.कु. सविता नगराध्यक्ष भ्राता माणिक चंद जी बोथरा को चित्रों की व्याख्या करते हुए।

← कासगंज में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए श्रीमति मीरा रानी जी ब्र.कु. मनोरमा, ब्र.कु. सावित्री तथा अन्य साथ में खड़े हैं।

पूना में राजयोग प्रदर्शनी → का उद्घाटन करते हुए पूना के उप-महापौर भ्राता अली सोम जी।

सफल एवं सुखी जीवन के मार्ग दर्शक ब्रह्मा बाबा

(ब्रह्माकुमार निर्वैर, आबू)

१८ जनवरी का दिन मानव इतिहास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण गुह्य रहस्य-युक्त एवं आशाओं के दीपकों की दीपमाला बना देने वाला दिन है जिसे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के भाई बहनें "पिताश्री ब्रह्मा के स्मृति दिवस" के रूप में मनाते हैं। हर मानव प्राणी के लिए यह दिन दिव्यता सम्पन्न जीवन बनाने का सन्देश लाता है— ब्रह्मा बाबा के समान भौतिकता के साथ-साथ आध्यात्मिकता व अलौकिकता के विकास से जीवन में ईश्वरीयपन, पावनता, शान्ति एवं अतीन्द्रिय सुख के महान अनुभव का आनन्द सदैव प्राप्त करने की ओर संकेत करता है। ब्रह्मा बाबा के आजीवन पुरुषार्थ के फल-स्वरूप प्राप्त आध्यात्मिकता, दिव्यता एवं अलौकिकता की चर्मसीमा तक पहुंचने एवं दिव्य फरिश्ता बन सूक्ष्म लोक पधारने अथवा मुक्ति और जीवन मुक्ति के प्राप्ति के महान लक्ष्य को प्राप्त करने की अद्भुत प्रेरणा देने वाला यह स्मृति अथवा समर्थी दिवस हर व्यक्ति के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस स्मृति-दिवस पर ब्रह्मा बाबा के जीवन से अनेक अमूल्य स्मृतियाँ आध्यात्मिक विकास के पथ पर आगे बढ़ने का नया उमंग-उल्लास भर देती हैं। १८ जनवरी १९६९ के दिन पिताश्री ब्रह्मा इस पुराने कलियुगी संसार व पुरानी देह के सर्व बन्धनों से मुक्त हुए और तब से अभी तक वह अपने सूक्ष्म फरिश्ता स्वरूप से विश्व के कोने-कोने में अनेकानेक मनुष्यात्माओं को अति श्रेष्ठ मार्गदर्शन दे रहे हैं।

सन् १९३६-३७ में जब से ब्रह्मा बाबा ने परमपिता परमात्मा शिव का तथा मानव जीवन के लक्ष्य स्वरूप सर्वगुण सम्पन्न श्री नारायण का दिव्य साक्षात्कार किया तभी से उन्होंने अपने जीवन को नियमपूर्वक बना दिया तथा साक्षात्कार द्वारा अनुभव किए लक्ष्य को इसी जीवनकाल में प्राप्त करने के लिए दिन रात आध्यात्मिक पुरुषार्थ में तत्पर रहे। अगर देखा जाए तो उनके जीवन के वह नियम हर व्यक्ति के जीवन के आध्यात्मिक विकास हेतु मनोविज्ञानिक रूप से बहुत ही लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं—जैसे कि :—

(१) प्रातः अमृतवेले ४ बजे उठकर शान्ति सम्पन्न राजयोग का अभ्यास करना, जिसमें स्वचिन्तन तथा प्रभु-मिलन का अनुभव, प्राणी के मन को सच्चे शान्ति और सुख की लहरों में लहराता है और आधे-पौने घंटे के इस मौन अभ्यास के पश्चात् ईश्वरीय ज्ञान अध्ययन करने से बुद्धि को योग्य आध्यात्मिक भोजन का बल प्राप्त हो जाने से मन-बुद्धि श्रेष्ठ व सतोगुणी स्थिति में रहते। जिसके फलस्वरूप व्यवहार में सारा दिन कुशलता रहती, परख शक्ति एवं निर्णय शक्ति की धारणा होने से आत्मविश्वास बना रहता तथा सफलता का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार कदम-कदम पर अनुभव होता। स्वयं तथा अन्य लोगों से खुश व सन्तुष्ट रहते तथा अगरबत्ती की तरह अपने घर व कार्य क्षेत्र में दिव्यता, मधुरता उमंग, उल्लास की सुगंध फैलाते, बहुत ही सौम्य व रमणीक वातावरण बना सकते। वह लोग जो प्रातः उठते ही समाचार पत्रों द्वारा मन-बुद्धि को लड़ाई-झगड़े आदि के समाचारों से सींचते हैं उनके मन में तनाव तथा व्यवहार में रूखा-सूखापन या गुस्सा सा महसूस होता उनका मन सन्तुलित नहीं रहता, कर्म श्रेष्ठ नहीं बनते।

२. परमपिता परमात्मा शिव से प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान के नियमित अध्ययन से ब्रह्मा बाबा ने अपनी जीवन को ऐसे सांचे में ढाल दिया जिससे अनेकानेक गुण स्वतः ही अनुभव होते थे—उनके जीवन में त्याग भावना रोम रोम में होने कारण सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति को "सादा जीवन उच्च विचार" का पाठ स्वतः ही पढ़ा देती। सबके बीच रहकर एक पिता परमात्मा के हर गुण व श्रीमत की गहराई में ले जाने वाली उनकी मन के मौन अथवा मनमनाःभव की तपस्या सदैव शान्ति की शक्ति का अनुभव करा देती। इस कलियुगी विश्व की समस्त मनुष्यात्माओं के कल्याणहेतु, पशु-पक्षियों के सुख तथा प्रकृति के पांचों तत्वों को पावन बनाने की बेहद की एवं विशाल सेवा के लिए बाबा की संकल्प शक्ति, मधुर वाणी एवं सर्वोच्च कर्म स्वतः ही हर एक को कर्मयोगी एवं विश्व-सेवाधारी बनने की प्रेरणा देते थे और ब्रह्मा बाबा के "मानवता के पिता" के व्यक्तित्व को प्रकट करते थे—जब बाबा हर एक व्यक्ति को स्वभाविक रीति "बच्चे-बच्चे" कह प्यार से बुलाते तो छोटे-बड़े, चाहे वह किसी भी धर्म या देश का हो, हर मनुष्यात्मा के मन में पिताभाव का स्नेह व आदर अथवा अपनेपन का प्रभाव प्रकट कर देता। संसार में आज इसी निःस्वार्थ भाव के स्नेह व अपने-पन की कमी है। ब्रह्मा बाबा के जीवन का हर क्षण स्नेह, शान्ति तथा आध्यात्मिक जागृति से अनुभवयुक्त का और हर व्यक्ति के लिए एक खुले पुस्तक की तरह मार्ग-दर्शक बना। उनकी इस त्याग-तपस्या और सेवा के जीवन के उदाहरण ने अनेकानेक भाई-बहनों को प्रेरित किया और बाबा ने उन्हें आप समान बनाया। उन निष्ठावान, तपस्वी, पवित्र, योगी एवं समर्पित भाई बहनों के सम्पर्क से आप सहज ही समझ सकते हैं कि "जिनकी रचना इतनी पावन, वह कितना पावन होगा।"

ब्रह्मा बाबा द्वारा प्रज्जवलित रुद्र-ज्ञान यज्ञ एक प्रैक्टिकल माडल है जो सिद्ध करता है कि एक पिता की रचना होने के नाते विश्व की सर्वआत्मायें आपस में भाई-भाई हैं। ऐसी श्रेष्ठ भाई भाई की श्रेष्ट-वृति से एक ईश्वरीय परिवार की भावना आपसी भेद भाव के सब झगड़ों को मिटाकर एक सुख-शान्तिमय संसार बना देती, इस कर्त्तव्य के निमित्त बने ब्रह्मा बाबा के "नये विश्व के पिता" के पार्ट को सहज ही स्पष्ट कर देता है।

ब्रह्मा बाबा का पावन जीवन हमें हमेशा प्रेरणा देता कि जीवन के सत्य को जानने के लिए, जीवन में सच्चे सुख शान्ति की प्राप्ति के लिए, परमपिता परमात्मा से मिलन मनाने के लिए हमें मनोविकारों (काम-

(शेष पृष्ठ २९)

साकार बाबा के जीवन से अनमोल प्रेरणाएं

ब्र० कु० कमलमणि, कृष्णानगर, दिल्ली

साकार ब्रह्मा बाबा का जीवन सबसे अधिक और सम्पूर्ण रूपेण ईश्वरीय शिक्षाओं, धारणाओं, नियमों और मर्यादाओं के अनुसार था, इसलिए वह हम सबके लिए अनुकरणीय है और 'श्रीमत' के पालन का प्रेक्टीकल उदाहरण है। अतः हम उनकी जीवन-कहानी को सामने रखकर देखेंगे कि मुख्य रूप से उनके आध्यात्मिक पुरुषार्थ के कौन से ऐसे मुख्य पद-चिन्ह व महान कृत्य हैं जिनके पालन से हम भी अपने आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर दिनों दिन अग्रसर हो सकते हैं।

१. पाना था जो पा लिया और क्या बाकी रहा

बाबा के जीवन-वृत्तान्त का जब हमें परिचय मिलता है तब हमें उससे ज्ञात होता है कि बाबा बाल्यकाल से ही भक्ति, पूजा, तीर्थ-यात्रा, शास्त्र-अध्ययन, दान-पुण्य, गुरु-सेवा आदि-आदि करते थे परन्तु इस सबसे वे सन्तुष्ट नहीं थे। आख़िर जब उन्हें शिव बाबा का साक्षात्कार हुआ और कलियुगी सृष्टि के महाविनाश का भी पूर्व-दर्शन हुआ तब उनके जीवन में एकाएक अवर्णनीय परिवर्तन आ गया। जब उन्होंने अपने लौकिक गुरु से इन साक्षात्कारों की चर्चा की तब उन्हें स्पष्ट मालूम हो गया कि वह (लौकिक गुरु) तो इन बातों से बिल्कुल ही अनभिज्ञ थे। अब साकार बाबा को यह पूर्ण निश्चय हो गया था कि अब उन्हें स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ही सद्गुरु के रूप में मिले हैं और उन्हें पढ़ा रहे हैं। उन्होंने इस निश्चय को सर्वोपरि महत्त्व दिया। शिव बाबा से मिलने वाले ज्ञान-रत्नों की तुलना में अपने जवाहरात की दुकान के हीरों और रत्नों को हेय समझा और उनके मुख से यही शब्द निकले—

"अल्लिफ़ को अल्लाह मिला
बे को मिली झूठी बादशाही
आई तार अल्लिफ़ को
हुआ रेल का राही"

गोया उनके सामने अब बादशाही भी झूठी बादशाही थी और शिव बाबा की प्राप्ति से बढ़कर अब दुनिया में कोई चीज़ नहीं रह गई थी। शिव बाबा को पाकर वे इतने खुश थे, इतने सन्तुष्ट थे कि उनके मुख से ये शब्द विनिसृत हुए थे कि—

'पाना था जो पा लिया और क्या बाकी रहा'

साकार ब्रह्मा बाबा ने यह देख लिया था कि अब उनके मुख द्वारा जो ज्ञान उच्चारित होता था, वह उन मन्तव्यों से भिन्न था जो पहले बाबा के लिये मान्य थे। ज्ञान, कर्म और उपासना—तीनों दृष्टिकोण से इनमें और पहले के मन्तव्यों में कुछ भी साम्य नहीं था।

अब हमारे लिये तो इस बात में निश्चय करना और भी अधिक सहज है कि यह ज्ञान परमपिता परमात्मा शिव स्वयं दे रहे हैं क्योंकि हम जानते हैं कि न तो यह साकार ब्रह्मा बाबा ने किन्हीं पुस्तकों को पढ़कर दिया, न ही यह उनके पूर्व मन्तव्यों पर आधारित था, बल्कि तत्क्षण उनके मुखारविन्द से जो एक झरने की न्यायीं ताज़गी से विनिसृत होता रहा और अब उनके अव्यक्त होने पर दूसरे मानवी मुख द्वारा विनिसृत होता है, यह वही ईश्वरीय ज्ञान है। इस ज्ञान के बिन्दुओं में परस्पर इतनी संगति है और ये ऐसे विवेक-युक्त हैं तथा इनके बताने और पालन कराने की विधि भी ऐसी है कि मनुष्य द्वारा इस प्रकार इसका उद्गम हो ही नहीं सकता। मनुष्य कोई अपने बल पर अन्य किसी को काम, क्रोध, लोभादि को पूर्णतः छोड़ने के लिये कह ही नहीं सकता। हां, वह इन विकारों को कम करने के लिए कह सकता है। अतः जैसे बाबा ने अपने जीवन में यह पूर्ण निश्चय

किया कि शिव बाबा ही हमारे शिक्षक और सद्गुरु हैं और इस निश्चय में अटल स्थिर होकर वे इस ज्ञान को एक विद्यार्थी की न्यायीं धारण करते रहे, वैसे ही हमें भी उस ज्ञान को अनमोल समझते हुए विधिपूर्वक, नियमवत् और निश्चयात्मक रीति से विद्यार्थी की न्यायीं अध्ययन करते हुए सदा गद्‌गद् होना चाहिए।

२. समर्पित जीवन

एक बार इस प्रकार निश्चय हो जाने के बाद बाबा ने अपना सर्वस्व शिव बाबा को समर्पित कर दिया और हरेक वस्तु से ममत्व छोड़कर, नष्टोमोह होकर ईश्वरीय सेवा में लगा दिया । उसके बाद किसी भी वस्तु को उन्होंने अपना मानकर प्रयोग नहीं किया, न ही उसे किन्हीं लौकिक कामों में लगाया। तन, मन, धन तथा दृष्टि, वृत्ति और स्मृति को सदा लोक कल्याणार्थ ही प्रयोग किया। वे स्वयं को निमित्त मात्र मानकर ही ईश्वरीय सेवा में प्रवृत्त रहे। वास्तव में आध्यात्मिकता के क्षेत्र में आगे बढ़ने की यही सहज और सही युक्ति है। जैसे शमा पर परवाने मर मिटते हैं वैसे ही परमात्मा रूपी शमा को पा लेने पर उस पर न्यौछावर हो जाना ही प्रीत की सच्ची रीति है। प्रेमी अपने प्रेमपात्र पर सदा अपना सर्वस्व कुर्बान करता ही है उसी प्रकार उस प्रीतम के मिल जाने पर हमारे मन में भी उसके प्रति समर्पण भाव उमड़ आना चाहिए। इस ईश्वरीय समर्पण भाव से ही मन का मैल धुलता है, आत्मा के पूर्व संस्कारों का जंग उतरता है और आत्मा भाव-विभोर होकर ईश्वरीय प्रेम की लहरों में लहराती रहती है।

ऐसी ही स्थिति हमारी भी होनी चाहिए। देना और लेना—इस संसार में समीकरण(equation)के दो पहलू हैं। जब हम सर्व भावेन प्रभु के अर्पित होते हैं तो वे भी अपना सब-कुछ हमारे अर्पण करते हैं। अतः प्रभु का प्यार पाने के लिए उससे प्यार करना और उसका अविनाशी ख़ज़ाना लेने के लिए अपने सर्वस्व पर उसी का हक मानना—यही उन्नति की विधि है जिसकी सबल प्रेरणा हम बाबा के जीवन से पाते हैं।

विद्यार्थी जीवन

बाबा एक इतने बड़े ईश्वरीय विश्वविद्यालय तथा उसके सेवाकेन्द्रों को संभालते और चलाते थे। दूसरे शब्दों में वह एक इतने बड़े रूहानी परिवार की ज़िम्मेवारी लिये हुए थे। इस परिवार में भी अनेक संस्कारों के लोग थे। इस समस्या-पूर्ण संसार में बाबा के सामने कई प्रकार की समस्याएं आती थीं परन्तु ये समस्याएँ और ज़िम्मेवारियाँ, ये कार्य और परिवार, बाबा के विद्यार्थी-जीवन में बाधक नहीं हुए। बाबा एक दिन भी विद्याध्ययन से वंचित नहीं रहे। शारीरिक अस्वस्थता हो या किसी की मृत्यु हो गई हो या कैसी भी कोई विकट परिस्थिति आ बनी हो परन्तु ज्ञान-स्नान, ज्ञान-भोजन, ज्ञानोपार्जन अथवा ज्ञान सेवन के बिना बाबा एक दिन भी नहीं रहे। उनकी दिनचर्या ३३ वर्ष निरन्तर प्रातः क्लास ही से शुरू होती। इतनी आयु होने पर भी और ईश्वरीय विद्या में सबसे आगे होने पर भी उन्होंने कभी क्लास को अनावश्यक या महत्त्व-रहित नहीं माना बल्कि वे सदा स्वयं को एक विद्यार्थी मानते हुए ही कहते—"ईश्वरीय विद्याध्ययन का जीवन ही सर्वश्रेष्ठ है" (Godly Student life is the best)

इतना व्यस्त रहते हुए भी न केवल उनका विद्यार्थी जीवन नियमवत् बना रहा बल्कि, मालूम नहीं कि वे किस समय ज्ञान का मनन भी कर लेते, और उसकी गहराई में भी जाते तथा उसका सार अथवा रस ग्रहण करते तथा अपने व्यावहारिक जीवन में उसे स्थान देते और यह सब करने पर ही वह दूसरों को कहते भी कि ज्ञान का ममन करना चाहिए।

वे कहा भी करते कि शिव बाबा, ब्रह्मा मुख से जो ज्ञान देते हैं, उसको सबसे पहले मेरे कान सुनते हैं और परिस्थितियों के वार भी सबसे पहले मुझ पर होते हैं। जिसके कारण अनुभवी बनकर मैं उस अनुभव से दूसरों को लाभान्वित करता हूँ। इसी प्रकार वे सदा यह भी कहते कि पढ़ाई तो अभी चल रही है। जब पढ़ाई पूरी हो जाएगी तो यह शरीर छूट जाएगा और पढ़ाई के बाद पद की स्टेज आ जाएगी। इस प्रकार वे पढ़ाई की ओर विशेष ध्यान रखते और खिचवाते भी और इसे ही अनमोल एवं अविनाशी धन मानते। विद्यादान को सर्वश्रेष्ठ दान बताते हुए वे मिलने वालों को भी सदा ज्ञानरत्न देते रहते। अतः वे विद्यार्थी भी ऐसे अद्भुत प्रकार के थे कि वे शिव बाबा की जितनी पढ़ाई पढ़ते, उससे

हज़ार लाख गुना औरों को पढ़ाते। इस विशेषता के कारण उनके जीवन में अनुपमेय नम्रता थी। विद्यार्थी-जीवन की सुगन्धि थी। वृद्धावस्था होने पर भी बाल-तुल्य सरलता थी। विद्यार्थी जीवन के जैसी सादगी और निश्चिन्तता थी। कभी भी उनके जीवन से यह भाव प्रगट नहीं होता था कि उन्होंने तो जितना पढ़ना था सो पढ़ लिया है और अब उन्हें पढ़ाई की ज़रूरत नहीं या अब उनकी विद्या में रुचि नहीं अथवा उनके पास अब इसके लिए समय नहीं। वह सबसे पहले विद्यार्थी (Student first and formost) थे और बाद में कुछ और। सभी उन्हें बाबा कहते परन्तु वे यह शब्द सुनते हुए भी विद्यार्थी बने रहे। उन्होंने यह नहीं माना कि पढ़ाई तो बच्चों का काम है न कि बाबा (पिता) का।

तपस्यामय जीवन

बाबा ने केवल विद्याध्ययन को ही महत्त्व नहीं दिया लेकिन सर्व प्रथम तो वह एक योगी थे। जिस समय वे कारोबार में व्यस्त होते तब भी वे व्यवहारी नहीं मालूम होते बल्कि उनसे योगीपन की भासना आती। जिस समय कोई उन्हें अपनी समस्या सुना रहा होता या वे किसी को निर्देश दे रहे होते तब भी ऐसा नहीं लगता कि वे सुनने और कहने में व्यस्त हैं बल्कि उनका योगाभ्यास होता रहता। उनके बैठने, उठने, चलने, बात करने, भोजन करने की विधि से प्रतीत होता कि वे लौकिक नहीं अलौकिक हैं। सामान्य नहीं योगयुक्त है। उनके मन, वचन, कर्म से कभी भी घबराहट, चिन्ता, उदासी, निराशा आदि नकारात्मक अथवा ऋणात्मक प्रवृत्ति का आभास नहीं होता था बल्कि मधुर मुस्कान, स्नेह, सौहार्द्र, उत्साह और शुभ भावना ही प्रकट होते थे। वे सदा शिव बाबा की ओर ध्यान खिंचवाते, आत्म-निश्चय में स्थित होने की ताकीद करते और शिव बाबा ही की सेवा पर तत्पर रहनेको उच्च भविष्यका सूचक मानते। इसके अतिरिक्त उनके पास सभी बैठने वालों को मन की स्थिरता, उपरामता, विदेह-अवस्था, एकान्त और शान्ति का भी अनुभव होता तथा सहज रूप से ही उनका मन ईश्वरीय स्मृति में लगने लगता। ये सभी चिह्न इस बात ही के तो परिचायक हैं कि वे स्वयं विदेहावस्था में और योग युक्त रहते।

वास्तव में इसका एक मुख्य कारण यह था कि बाबा ने सभी सम्बन्ध एक शिव बाबा से जोड़े थे। उनके मन में न किसी लौकिक सम्बन्ध की स्मृति थी और न ही उसका लेश मात्र आभास। एक बार शिव बाबा का हो जाने पर उनके सर्व सम्बन्धों में रुहानियत आ गई और उनका स्नेह अत्यन्त विशाल और व्यापक हो गया। अब वे दूसरों से जो भी बातचीत करते, उस द्वारा उनका कल्याण करने और उन्हें सेवा में ही लगाने का सोचते। इसलिए उनके जीवन में लौकिकता रन्च मात्र भी न थी।

सेवा, सेवा और सेवा

यदि उनके जीवन में विद्या अथवा योग को प्राथमिकता थी, तो सेवा को भी उनके जीवन में कोई द्वितीय स्थान नहीं था। यदि वे स्वयं को एक विद्यार्थी और योगी मानते तो साथ-साथ वे स्वयं को एक ईश्वरीय सेवाधारी भी मानते। ईश्वरीय सेवा में तत्पर रहने वालों को वे ईश्वर का दिलतख्त नशीन मानते और वर्तमान समय सेवा का ताज धारण करने वालों को भविष्य का ताज-अधिकारी बताते। सेवा धर्म उनके लिए परम धर्म था। लौकिक जीवन में इतना उच्च मान, मर्तबा होने के बावजूद भी अब अलौकिक जीवन में वे सब प्रकार के सेवा-कार्य में भाग लेते। लकड़ियाँ उठाने, कपड़े धोने, सब्ज़ी काटने, गेहूँ बीनने तक के यज्ञ कार्य में वे सह-योगी बने रहे। सेवा के कार्य में वे दधीचि ऋषि थे। सेवा-कार्य में 'न' करने वाले को वे नास्तिक मानते। सेवा में सफलता को वे योगावस्था का सूचक मानते। सेवा-रहित मनुष्य को वे स्वयं पर बोझ चढ़ाने वाला व्यक्ति मानते। इस प्रकार बाबा के जीवन की कितनी विशेषतायें बताएं। विशेषतायें बहुत हैं स्थान कम। वे तो विशेषताओं की मूर्ति थे।

———

क्रान्तिदूत ब्रह्मा

ब्र० कु० राजेन्द्र कुमार, उज्जैन (म० प्र०)

सृष्टि के आदिकाल (सतयुग-त्रेतायुग) का समय। सारा ही संसार सुख-शान्ति में हिलोरे ले रहा था। वह समय सतोप्रधानता एवं पावनता की प्रतिमूर्ति प्रतीत होता था। बुराई अथवा विकार (काम, क्रोधादि) क्या होते हैं, इसका किसी को भी भान नहीं था। एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा और एक कुल से सुशोभित उस स्वर्णिम भारत में शेर और गाय भी एक घाट पर पानी पीते थे। सोने की चिड़िया कहलाने का हकदार वास्तव में उस समय का ही भारत था।

लेकिन त्रेतायुग (२५०० वर्ष) बीतते-बीतते अचानक ही जैसे कि उस स्वर्गिक दुनिया में पतझड़ आ गया हो। सुख-शाँति रूपी पत्ते उस स्वर्गिक वृक्ष से एक-एक कर गिरने लगे। चारों ओर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का ताँडव दृश्य नज़र आने लगा। सुख-शांति-पवित्रता वहाँ की आत्माओं से लगभग छिन चुकी थी। धीरे-धीरे वह स्वर्गिक दुनिया विकारी नर्क में बदल गई और इस प्रकार द्वापर युग की शुरूआत हुई।

मानव पुनः उस सुख-शाँति-पवित्रता की प्राप्ति के लिए मंदिर-मस्जिद और गिरिजाघरों में फरियाद करने लगा। चारों ओर भक्ति का वातावरण व्याप्त हो गया। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों के कारण आत्मायें त्राहि-त्राहि करने लगी। इसी कशमकश में द्वापर समाप्त होते-होते कलियुग (कलहयुग) की शुरूआत हुई। इस कलियुग में पापाचार, भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया और साथ ही साथ मानव आत्माओं का भगवान को पुकारने एवं इस नर्क (कलियुग) से छुटकारा पाने का अलाप भी बढ़ता चला गया। हे ईश्वर या खुदा, ओ गाड की आवाजें चारों ओर से आने लगी थीं।

अन्ततः इस कलियुग के अन्तिम समय (संगमयुग) पर अचानक ही उस ईश्वर ने मानव आत्माओं की पुकार सुनी और सृष्टि पर एक अलौकिक, आकर्षक एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व का क्राँतिदूत के रूप में उदय हुआ। परमपिता परमात्मा ने उस क्रान्तिदूत को अपना माध्यम बनाकर नाम दिया—"ब्रह्मा"। परमपिता परमात्मा की प्रेरणा से उस क्रान्तिदूत ने संसार में आध्यात्मिक क्रान्ति का बिगुल बजा दिया।

तब, जबकि सारी सृष्टि पतित, तमोप्रधान बन चुकी थी और उसमें परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की जा रही थी, ऐसे सही वक्त पर "क्रान्तिदूत-ब्रह्मा" के माध्यम से परमपिता परमात्मा ने विकारों एवं बुराईयों के विरुद्ध एक आध्यात्मिक क्रान्ति का आह्वान किया। उस क्रान्तिदूत ने समस्त आत्माओं को सन्देश दिया—"तुम मुझे विकार दो, मैं तुम्हें स्वराज्य दूंगा"। वही विकार जिनके कारण उस स्वर्णिम भारत को नर्क बनना पड़ा था।

इस अहिंसक आध्यात्मिक क्रान्ति में उन्होंने अपना तन-मन-धन सभी कुछ अर्पित कर दिया और इस प्रकार उन्होंने अपनी मेहनत एवं लगन से एक कुशल सेनापति की भाँति इस अध्यात्मिक क्रान्ति का नेतृत्व किया। उनके कर्मों एवं गुणों की याद आने पर वास्तव में ही आश्चर्य होता है कि किस प्रकार उन्होंने विश्व परिवर्तन जैसे कठिन कार्य को सहज कर दिखाया था। वे वास्तव में एक लौहपुरुष थे, जिन्होंने सारे विश्व को परिवर्तन करने का बीड़ा उठाया था। वे अपार-अनुपम गुणों की प्रतिमूर्ति थे। वास्तव में उन आत्माओं के भाग्य पर ईर्ष्या होती है, जिन्होंने उस महान क्रान्तिदूत को साक्षात् देखा और उनके संग का आनन्द पाया।

उस क्रान्तिदूत ने बड़े ही सुन्दर तरीके से इन विकार रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सम्पूर्णता को प्राप्त किया और इस प्रकार अनेक आत्माओं का मार्ग प्रशस्त किया। उन्हीं के इस क्रान्तिकारी कार्य को सतत् रूप से आगे बढ़ा रहा है—"प्रजापति ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय"। तो आईये हम सभी इसके माध्यम से उस महान क्रान्तिदूत के कार्यों को आगे बढ़ाते हुए विकारों पर विजय प्राप्त करने हेतु उनके द्वारा शुरू की गई "आध्यात्मिक क्रान्ति" में शरीक होकर उन्हें स्मृति के पुष्प अर्पित करें।

———

सफल एवं सुखी जीवन के मार्गदर्शक ब्रह्माबाबा

पृष्ठ २४ का शेष

क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार) का त्याग करना अनिवार्य है और पुराने विकर्मो के हिसाब किताब को परमात्म-योगाग्नि से मिटाना आवश्यक है, नहीं तो आत्मा में संस्कार परिवर्तन नहीं होगा। अगर पुराने पतित संस्कार परिवर्तन नहीं होंगे तो विचार भी परिवर्तन नहीं होंगे, विचार श्रेष्ठ नहीं तो कर्म भी श्रेष्ठ नहीं। कर्म श्रेष्ठ नहीं तो फल भी श्रेष्ठ नहीं अर्थात् सच्चे सुख-शांन्ति से वंचित। इसलिए ब्रह्मा बाबा स्वयं भी ऐसी श्रेष्ठ जीवन जीये और सर्व को अपने अनुभव से यही कहते थे, "मीठे बच्चे, देही-अभिमानी बनो और शिव बाबा (परमात्मा)को अति प्रेम से याद करो तो विकारों पर विजय होगी, आत्मा पावन बनेगी और खुशी का पारा ऊपर जायेगा अर्थात् योगबल से विकारों पर विजय प्राप्त करने से आत्मा अपने असली स्वरूप में, अपने पवित्र और शान्त स्वधर्म में स्थित हो सच्चे सुख के अनुभव में रहती। हर मानव का यही तो लक्ष्य है और इस लक्ष्य का उत्तर ब्रह्मा बाबा के जीवन से सहज मिलता। "अपने स्वधर्म में स्थित होने से ही सदा सुखी बनेंगे"—विश्व के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति इस महान सत्य को जान लें तो आज विभिन्न देशों के आपसी लड़ाई झगड़ों अथवा अणु-युद्ध का खतरा भी टल जाएं क्योंकि लड़ाई का मूल कारण है ही क्रोध, लोभ और अहंकार। शांति की शक्ति से इस बीज को ही हर मनुष्य के मन से मिटा दिया जाए तो हर घर, हर समाज, हर देश तथा विश्व में शान्ति का वातावरण बन सकता है। शान्ति की शक्ति के विकास के लिए शान्ति के सागर परमपिता परमात्मा शिव के साथ योगयुक्त हो रहना आवश्यक है। ब्रह्मा बाबा हमेशा स्वयं इस अभ्यास में रहे तथा हर मनुष्यात्मा को चाहे वह राजनेता हो, धर्मनेता हो या अन्य कोई भी हो, उन्हें भी प्रेम और शान्ति की शक्ति के विकास तथा प्रयोग करने पर बल देते रहे हैं।

प्रिय बहनो और भाइयो, ब्रह्मा बाबा के जीवन उदाहरण से यह प्रेरणा लेते हुए अपने इस विश्व के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अहसास करें, अपने जीवन को नियमित, पवित्र, संतुलित एवं श्रेष्ठ बनायें और परमपिता परमात्मा शिव की ब्रह्मा बाबा द्वारा उच्चारण की हुई दिव्य ज्ञान वाणी से प्राप्त अनगिनत अमूल्य ज्ञान रत्नों से सर्वगुण सम्पन्न, सर्वकला संपूर्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म देव समान बनाएँ तथा अपनी योगशक्ति से समस्त विश्व के पर्यावरण को पावन बनाकर इस धरा पर पुनः सतयुगी दैवी स्वराज्य की स्थापना करने का दृढ़ संकल्प लें।

बाबा सितारों के बीच

(पृष्ठ १० का शेष)

दिल्ली में।

वहाँ गौरी शंकर मन्दिर के प्राँगण में भाषण होने लगे। परन्तु शिव बाबा का चमत्कार था कि सत्संग में आने वाले अनेक नर नारियों को साक्षात्कार होने लगे और लोगों का आकर्षण ईश्वरीय ज्ञान की ओर बढ़ने लगा और चारों ओर धूम मच गई कि ये देवियाँ प्रभु का दीदार कराती हैं।

इसी प्रकार जब हम लखनऊ में गईं तो वहां भी धर्मशाला में प्रति दिन सत्संग रखा गया। वहाँ भी लोगों को साक्षात्कार होने लगे। वही धूम वहाँ भी मच गई। तो धर्मशाला की मालिकिन माता हमसे बड़ा आग्रह करने लगी कि मुझे श्रीकृष्ण का दीदार करा दो। हमने उसे बहुत समझाया कि यह तो शिव बाबा की शक्ति है। परन्तु वह न मानी, आखिर उसने ३ दिन व्रत किया और शिवबाबा ने उसकी इच्छा पूर्ण की। वह ध्यानस्थित हुई और श्रीकृष्ण का साक्षात्कार किया।

बाबा का अथाह प्यार

इस प्रकार सेवा केन्द्र खुलने लगे। बाबा हमें जहाँ भी भेजते थे—हम वहीं निसंकल्प होकर चली जाती थी। इसलिए बाबा मुझे बहुरूपी और चक्रवर्ती कहा करते थे।

सेवा-केन्द्रों पर रहते हुए मुझे ध्यान था कि बाबा के वारिस बच्चे तैयार किए जायें। मैं आने वाली कन्याओं की पूर्णतया ज्ञान योग से पालना करती थी, उन्हें बाबा के समीप लाती थी। उन्हें योग्य टीचर बनाने का संकल्प रखती थी। तो बाबा के बहुत ही प्यार व उमंग भरे पत्र मुझे मिलते थे। बाबा का ये प्यार ही इस जीवन का आधार रहा। बाबा के प्यार की याद आते ही मन की कलियाँ खिल उठती हैं। और मन गाने लगता है—इतना प्यार करेगा कौन···

गत वर्ष के प्रति

कितने अनुभव छिपा के अन्तराल में
चल दिया तू काल के गाल में!
गया! गया! वष तिरासी अतीत हो गया।
हमारा "राज-भाग" और निकट आ गया।
कह गया क्या?

गुज़रे सीन जो थामना नहीं,
'नथिंग-न्यू', उन्हें बाँधना नहीं;

हो बादशाह बेगमपुर के, ज्ञान की सवारी,
न होता कटु कुछ भी, है सब कल्याणकारी;
"वाह मीठा ड्रामा!" यही सौगात दे गया।
हमारा "राज-भाग" और निकट आ गया॥

काया! और काया की माया को भूल,
माया! और माया की छाया से दूर;

युग संगम पुरुषोत्तम में—

संग बाप के 'गमन' रहे,
रंगे बाप में तो 'गम' न रहे;

अलौकिक यही पैगाम दे गया।
हमारा 'राज-भाग' और निकट आ गया॥

थोड़े में कभी सन्तुष्ट न होना,
पकने दो फल कच्चा न तोड़ना,

भरते-जाते गुण जितना-जितना,
करते जाते बाबा आगे उतना;

अनमोल ऐसा भेद बता गया।
हमारा 'राज-भाग' और निकट आ गया॥

अकाउन्ट 'मनी' का रखने वाले,
'मन' का भी है रखना साथ;
मिठास वाणी की दर्शाने वाले,
रूप से आपके झलके बाप;

राज़ इसी ने वानप्रस्थ ला दिया।
हमारा 'राज-भाग' और निकट आ गया॥

नव वर्ष में नव स्वागत

(ब्र. कु. राजकमारी, मजलिस पार्क, देहली)

ज्ञान से सिंचते, प्रकाश से पलते,
फर्श से उड़ते, अर्श को बढ़ते;
ये फरिश्ते मुबारक कहते।
नव वर्ष में नव स्वागत करते!

कामना यही चूमे सफलता कदम तिहारे,
नव सृष्टि के ओ नव चेतन सितारे;
बाप-दादा की आशाओं के दीप,
नव वर्ष में निभाए जो नव रीत;
बन अथक हर्षित जो चलते रहते।
ये फरिश्ते उनको मुबारक कहते॥

किनारा तो परिस्थिति से सब करते हैं;
परिवर्तन जो स्वस्थिति से करते;
अशान्त को स्वकिरणों से शान्त बनाएं,
दुख की जिन्हें अविद्या हो जाएं;
फैले पावनता वायब्रेशन से जिनके,
लग के पंख ज्ञान-योग के जो उड़ते रहते।
ये फरिश्ते उनको मुबारक कहते॥

हो वर्ष नया, न रहें करतब भी पुराने;
हो जीवन नया, रहें न पर संकल्प पुराने;
मार्ग प्रशस्त पर कदम भी न डगमगाए
बेशक साथी अमर पर न हाथ छूट जाए;
अविनाशी ऐसी शुभ भावना रखते।
ये फरिश्ते उनको मुबारक कहते॥

यूँ तो—

'वन-वन-वन' में होगा नव वर्ष तिहारा,
'प्युरिटी' की अलौकिक पर्सनैलिटी वाला;
उस वर्ष के स्वागत में तत्पर यह जीवन जिसका;
वर्ष चौरासी खुद स्वागत करता उसका;
झलक जिनकी 'उड़न-तश्तरी दिखावे—

ये फरिश्ते उनको मुबारक कहते।
नव वर्ष में नव स्वागत करते॥

आध्यात्मिक सेवा समाचार

डोंबीवली सेवा केन्द्र की ओर से पुलिस मैदान में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। प्रैस कान्फ्रेंस भी बुलाई गई। डोंबीवली के भारत नाट्यम मन्दिर के खुले मदान में भ्राता पंचमसिंह जी का प्रवचन कार्यक्रम रखा गया। मेले द्वारा लाखों आत्माओं को शिव बाबा का परिचय मिला, जिनमें लगभग ६००० स्कूलों के विद्यार्थी भी शामिल हैं।

बंगलौर सेवाकेन्द्र की ओर से पुण्य क्षेत्र उडुपी में मिनी मेले का आयोजन किया गया। मेले के अन्तर्गत डाक्टर वर्ग, महिला वर्ग, धर्मावलम्बियों तथा शिक्षक वर्ग की अलग-अलग कान्फ्रैंस बुलाई गई जिनके द्वारा अनेकानेक आत्माएं लाभान्वित हुई। इसके अतिरिक्त निकटवर्ती स्थान मणिपुर में सिंडिकेट बैंक के गोल्डन जुबिली हाल में प्रवचन तथा प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम भी रखा गया।

भुज (कच्छ) सेवा केन्द्र की ओर से भारतीय सांस्कृतिक सेवा मंगल के हाल में चैतन्य झांकी तथा आध्यात्मिक झांकी का आयोजन किया गया। शहर के मुख्य मार्गों से शान्ति यात्रा भी निकाली गई।

बड़ौदा सेवा केन्द्र की ओर से अलकापुरी विस्तार में "मानव एकता आध्यात्मिक मेले" और राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। प्रैस कान्फ्रेंस भी बुलाई गई शहर के प्रमुख मार्गों से शोभा यात्रा निकाली गई। मेले में तथा पादरागांव एवं बड़ौदा की सैंट्रल जेल में ब्र० कु० पंचमसिंह के अनुभव सुनाने हेतु प्रवचन कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इसके अतिरिक्त डाक्टर वर्ग का सेवा केन्द्र पर ही स्नेह मिलन बुलाया गया जिसमें मधुवन में हुए डाक्टर वर्ग के राजयोग शिविर में भाग लेने वाले छः डाक्टर्स ने अपने-अपने अनुभव सुनाए।

मालेगांव सेवा केन्द्र की ओर से लोकमान्य हाईस्कूल में "विश्व बंधुत्व आध्यात्मिक मेले" का आयोजन किया गया। चैतन्य देवियों की झांकी मेले का विशेष आकर्षण थी। लगभग ५०० भाई-बहिनों ने शोभा यात्रा भी निकाली। मेले के अन्तर्गत ही एक स्नेह मिलन का आयोजन किया गया जिसमें सभी वर्गों के लगभग ३०० प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। लाखों आत्माओं ने मेले से लाभ उठाया।

अजमेर सेवा केन्द्र की ओर से प्रसिद्ध धार्मिक स्थान पुष्कर में "चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी" लगाई गई। इस स्थान पर हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी राजस्थान टूरिस्ट मेले व पशुमेले का आयोजन किया गया जिसमें ही एक बड़ा पाण्डाल लेकर यह प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन राजस्थान के गृह राज्य मन्त्री भ्राता गोविन्दसिंह गुर्जर ने किया। मेले में आए हुए विदेशी टूरिस्टों सहित लगभग २,५०,००० आत्माओं ने प्रदर्शनी से लाभ उठाया।

हजरतगंज (लखनऊ) सेवाकेन्द्र की ओर से गंगा स्नान पर्व पर गोमती नदी के तट पर लगने वाले विशाल मेले में "चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे मेले में आई हुई अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

मेहसाना सेवा केन्द्र का दशाब्दी महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर द्विदिवसीय मानवशान्ति महासम्मेलन का आयोजन किया गया शोभा यात्रा भी निकाली गई। दस कन्याओं का प्रभु समर्पण समारोह भी बड़े धूमधाम से मनाया गया जिसमें कई प्रमुख व्यक्ति शामिल हुए। समाप्ति सत्र में ब्र० कु० पंचमसिंह तथा अन्य वक्ताओं के प्रवचन हुए।

सहारनपुर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि मैडिकल वैलफेयर सोसायटी सहारनपुर द्वारा आयोजित वार्षिक उत्सव पर टी. बी. सैनिटोरियम गृह में तथा रोटरी कलब मिड टाउन द्वारा अयोजित सभा मैसोनिक लौज में बम्बई से पधारे ब्र. कु. डा. गिरीश पटेल ने राजयोग द्वारा रोगों का निराकरण विषय पर प्रवचन किए।

हुबली सेवाकेन्द्र का १४वां वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। केन्सर हास्पीटल के कैम्पस में नवानगर रोटरी कलब के प्रेजीडैंट डा. सी. जी. पोनप्पा के द्वारा राजयोग सेवाकेन्द्र का उद्घाटन भी किया गया।

कटक सेवा केन्द्र की ओर से जटनी, वाली यात्रा तथा छतिया में विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त काएमा गीता पाठशाला के वार्षिक उत्सव पर प्रवचन तथा प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

नरेला सेवा केन्द्र की ओर से दो हायर सैकेन्ड्री स्कूलों में टीचर्स के लिए साप्ताहिक पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया जिससे ३५ अध्यापकों ने लाभ लिया। इसके अतिरिक्त शहर में दो दिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

कालेज स्कवेयर (कटक) सेवा केन्द्र पर "चरित्र निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय के उद्घाटन के उपलक्ष्य में शोभा यात्रा निकाली गई और प्रैस कान्फ्रेंस तथा वक्तव्य स्पर्धा का भी आयोजन किया गया।

काठमांडू (नेपाल) सेवाकेन्द्र की ओर से नेपाल की महारानी के 35वें जन्म दिवस के उपलक्ष में शोभा यात्रा निकाली गई। नारायणहिट्टी राजदरबार में महारानी जी को दिव्य गुणों का गुलदस्ता" चित्र भेंट किया गया। इसके अतिरिक्त रायल नेपाल एयरलाइन्स कारपोरेशन के डायरेक्टर के नियंत्रण पर उनके घर में प्रवचन तथा प्रोजैक्टर का कार्यक्रम भी रखा गया।

सोलापुर सेवाकेन्द्र का दशम वार्षिक उत्सव बडे धूमधाम से मनाया गया। पंठरपुर महानतीर्थ स्थान पर म्यूनिसीपैलिटी द्वारा आयोजित मेले में पंडाल लेकर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसे लगभग ५०,००० आत्माओं ने देखा।

डभोई सेवा केन्द्र द्वारा निकटवर्ती गांवों कुकड़, धर्मपुरा, वठपाण, बोरियाद खान्डयाकुवा, शमशेरपुरा, हवीपुर, बोरबार, बोडेली, नानाकरारा आदि गांवों में सरपंचों के सहयोग से प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर के कार्यक्रम आयोजित किए गए जो कि सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

डिब्रूगढ़ सेवा केन्द्र की ओर से स्थानीय जेल में तथा पुलिस रिजर्व में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन एवं प्रौजैक्टर शो के कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनके लगभग ६२५ कैदियों एवं ५०० पुलिस कर्मचारियों एवं अधिकारीगण ने लाभ उठाया।

मोरिशयस सेवा केन्द्र की ओर से गंगा स्नान-उत्सव पर उत्तर में मोन कोई सी में, पूर्व में बैले मैरे में, दक्षिण में नील खाड़ी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिनसे लगभग १५०० आत्माओं ने लाभ उठाया।

बांदा सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि जन-जन को ईश्वरीय संदेश देने हेतु बिसण्डा ब्लाक में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। हर रविवार को विशाल तुलसी मंदिर में भी प्रदर्शनी लगाई जाती है। जिला जेल एवं अंध विद्यालय में प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

संकेश्वर, श्री गंगानगर, आनंद, तेजपुर, हिंगणघाट दार्जिलिंग, जयपुर, बलसार, फिरोजपुर सिटी, नयागंज (कानपुर), रानीबाग, मुजफ्फरपुर, पानीपत, फिरोजाबाद मुजफ्फर नगर, झांसी तथा बालामऊ (लखनऊ) आदि सेवा केन्द्रों द्वारा भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों द्वारा की गई ईश्वरीय सेवाओं के समाचार प्राप्त हुए हैं।

भरूच सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि मुहम्मद पुरा बंबाखाना विस्तार में तथा 'शक्ति नगर' सोसाइटी में "विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी" और स्वर्ग की चैतन्य झांकी सजाई गई जिनके द्वारा अनेक आत्माओं को शिव बाबा का दिव्य संदेश प्राप्त हुआ।

जालन्धर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि गीता जयन्ती के अवसर पर जालन्धर दूरदर्शन में रचना कार्यक्रम के अन्तर्गत 'गीता एवं लोक धर्म' विषय पर ब्र. कु. आनन्द जी ने ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ओर से परिचर्चा में भाग लिया। इसके अतिरिक्त गोराया में दो दिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

अकोला सेवा केन्द्र की ओर से दस दिन के लिए "स्वराज्य भवन मैदान" पर मेले का आयोजन किया गया। शहर के प्रमुख मार्गों में से विशाल शोभायात्रा भी निकाली गई। प्रैस कान्फ्रैंस बुलाई गई। लगभग २ लाख आत्माओंने मेले से लाभ उठाया। नवदुर्गा मंडप मेले में विशेष आकर्षण का केन्द्र था।

जम्मू-कश्मीर सेवा केन्द्र की ओर से १६ दिन के लिए एक विशाल आध्मात्मिक मेले का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन जम्मू-कश्मीर के मुख्य न्यायधीश गुप्ता वी० खालिद ने किया। उद्घाटन से पूर्व शहर में एक सुन्दर झांकी सहित शान्ति यात्रा निकाली गई। अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा आम जनता ने मेले से लाभ उठाया, जिनमें भूतपूर्व वित्त मंत्री, एक एम. एल. सी. तथा खाद्य मंत्री भी शामिल हैं। सभी ने अपनी-अपनी शुभ सम्मति देते हुए संस्था के कार्यों की सराहना की।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र०कु० आत्म प्रकाश, बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (E)—70